॥ ओ३म् ॥

संस्मरण तथा जीवन दर्शन

...जी धर्मेन्दु ...र्योपदेशक

के

...था जीवन दर्शन

नास्ति येषां यशः काये जरा मरणं भयम्

लेखकः—

रघुनाथप्रसाद पाठक

प्रकाशकीय वक्तव्य

मैं अपने को बड़ा गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूं जब मैं श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु, आर्योपदेशक की इस प्रेरणा दायक जीवनी के प्रकाशन के सम्बन्ध में दो शब्द लिख रहा हूं।

मेरा और उनका पिता-पुत्र का सम्बन्ध है। आर्य युवक परिषद, दिल्ली (पंजी०) के तो श्री पं० जी एकमात्र आत्मा हैं। वे बड़ी लगन के व्यक्ति हैं जिस कार्य को करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेते हैं उसको बड़ी कुशलता के साथ सम्पन्न करके ही दम लेते हैं। परिषद को सत्यार्थप्रकाश की परीक्षाओं के माध्यम से ऋषि के मन्तव्यों को देश में पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक घर २ में पहुंचाने में जो सफलता मिली है उसकी देश की बड़ी से बड़ी आर्य संस्था भी स्पर्धा किए बिना नहीं रह सकती। यह पं० धर्मेन्दुजी के अनथक परिश्रम, उत्साह एवं बच्चों के जीवनों को सच्चरित्र और धार्मिक बनाने की लगन का ही तो परिणाम है।

पं० जी आशावादी हैं। कोई सभा हो छोटी, बड़ी उपस्थिति अधिक-कम, मौसम भी चाहे साथ न दे, परन्तु यह पं० जी ही हैं जो कि अपना पूर्व से निश्चित कार्यक्रम उसी उत्साह और लगन से सम्पन्न करने से नहीं चूकते। हां, एक बात और भी। पं० जी जहां तन, मन से युवक परिषद के कार्यों में संलग्न रहते हैं वहां अपनी पवित्र कमाई में से भी सहस्रों रुपये की राशि देकर युवक परिषद के कार्यों को बढ़ावा देते रहते हैं। यही नहीं उनकी धर्मपत्नि ने भी पांच सहस्र रुपये की एक बड़ी राशि देकर युवक परिषद की नींव को और भी सुदृढ़ किया है।

मुझे विश्वास है कि ऐसे महान् कुशल कार्यकर्त्ता परम विद्वान, निष्ठावान उपदेशक, अनथक प्रचारक और हरदम बच्चों के हित चिंतक की यह जीवनी पढ़ने वालों के लिए अद्भुत प्रेरणा का स्रोत होगी।

आर्य युवक परिषद
१६५४, कूचा दखिनीराय
दरियागंज, नई दिल्ली-२

ओ३म् प्रकाश एम. एस-सी
प्रधान-मन्त्री
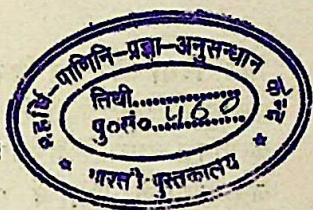
॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज के प्रेरक

श्रीयुत पं० देवव्रत धर्म्मेन्दु आर्योपदेशक

संस्मरण तथा जीवन-दर्शन

सिद्धान्त दृढ़ता

एक विधवा विवाह कराने के लिए श्रीयुत पं० देवव्रत जी धर्म्मेन्दु को आमन्त्रित किया गया। विवाह संस्कार से १ दिन पूर्व धर्म्मेन्दु जी को विदित हुआ कि उस क्षत योनि विधवा का विवाह एक अविवाहित युवक के साथ होना तय हुआ है। विधवा का बिवाह एक अविवाहित के साथ होना वा कराना सिद्धान्त विरुद्ध है। अतः उन्होंने इस संस्कार को कराने से इन्कार कर दिया और बड़ी अनुनय विनय करने, प्रलोभन देने तथा दबाव डाले जाने पर भी वे इस संस्कार को कराने के लिए उद्यत न हुए। यह है उनकी सिद्धांत दृढ़ता की एक झांकी।

विचित्र विवाह

एक सम्पन्न व्यक्ति ने धर्मेन्दु जी को अपनी पुत्री का विवाह संस्कार कराने के लिए निमन्त्रण दिया। वे ठीक ६ बजे सायंकाल कन्या पक्ष वालों के यहां पहुंच गए। कन्या पक्ष वालों ने धर्म्मेन्दु जी को पास के एक मकान के कमरे में

बिठा दिया और कह दिया कि जब संस्कार होगा तब वे उन्हें बुला लेंगे। प्रतीक्षा करते २ रात के १२ बज गए। धर्म्मेन्दु जी कन्यापक्ष वालों के घर गए और पूछा 'संस्कार कब होना है ?' जब कन्या के पिता ने यह कहा कि 'बारात आई थी और लड़की विदा होकर चली गई' तब धर्म्मेन्दु जी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। जब उन्होंने यह ज्ञात किया कि संस्कार कब और किसने कराया है तो उत्तर मिला कि संस्कार की कोई जरूरत नहीं समझी गई, लड़की ने लड़के के गले में बर माला डाल दी और लड़के ने लड़की को अंगूठी पहना दी। फलतः धर्म्मेन्दु जी अपने घर को लौट गए और आने जाने का तांगा व्यय भी अपनी जेब से खर्च करना पड़ा। परन्तु उन्हें सन्तोष रहा कि ऐसे संस्कार विहीन विवाह से उनका पृथक् रहना ही श्रेयस्कर था। जो कानून की दृष्टि से भी वैध न था।

अर्थ शुचिता

१९६१ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की स्वर्ण जयन्ती मनाई गई थी। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन भी श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में हुआ था। इस आयोजन का प्रबन्ध भार स्वागत समिति की ओर से उसके अध्यक्ष श्री देशराज जी चौधरी तथा उसके मन्त्री श्रीयुत धर्म्मेन्दु जी पर डाला गया था। इन दोनों की कार्य कुशलता योग्यता, प्रबन्ध पटुता और प्रभाव के विषय में सार्वदेशिक सभा आश्वस्त थी। १९४४ के आर्य महासम्मेलन की प्रबन्ध व्यवस्था में श्री ला० नारायण दत्त जी के निर्देशन में ये दोनों सज्जन संलग्न रहे थे और

अपने दायित्व का खूबसूरती से निर्वाह किया था।

श्री धर्म्मेन्दु जी आनरेरी रूप से कार्य करते थे। एक सज्जन एक सम्मान्य अतिथि के लिए एक होटल से भोजन लेने के लिए भेजे गए। भोजन २) का था परन्तु उसे लाने का उन सज्जन का टैक्सी का व्यय ५) था। ५) के इस व्यय का सार्वजनिक धन का घोर दुरुपयोग समझा जाना स्वाभाविक था, विशेषतः आर्यसमाज में जो अर्थ शुचिता के लिए सुप्रसिद्ध है। श्री धर्मेन्दु ने यह व्यय सभा पर डाला जाना ठीक न समझा और ५) अपनी जेब से दे दिए।

कुरीति निवारण

होश्यारपुर जिले के जेजों स्टेशन के पास ही एक ग्राम में एक पढ़ी लिखी कन्या के विवाह के लिए आपको आमन्त्रित किया गया। वहां पहुंचने पर आपको पता चला कि वर पक्ष वाले वारात के साथ वेश्या ला रहे हैं। आपने बड़ी तत्परता से कन्या के पिता से पूछा कि क्या आप पसन्द करते हैं कि वेश्या का नाच आपके घर पर हो। यदि ऐसा है तो मैं संस्कार कराये विना दिल्ली लौट जाता हूं। उन्होंने कहा हम पसन्द तो नहीं करते पर करें भी क्या ? तब श्री धर्मेन्दु जी ने वर पक्ष को कन्या के पिता की ओर से पत्र लिखा कि उड़ती उड़ती खबर मिली है कि आप बरात के साथ वेश्या ला रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यह विरोधियों की बात उड़ाई हुई है परन्तु यदि यह सच हो तो न धर्म शास्त्र विहित यह कर्म हैं न दोनों परिवारों की शोभा बढ़ाने वाला यह कृत्य है। पुनरपि आप वेश्या लाने का दुराग्रह करेंगे तो यह विवाह नहीं होगा। आपकी ओर से जोर जबरदस्ती करने की अवस्था में हम पुलिस की

सहायता लेंगे, फलतः वर पक्ष वालों को झुकना पड़ा और श्री पं० धर्मेन्दु जी पूर्ण वैदिक रीति से यह विवाह सम्पन्न करा कर दिल्ली लौट आए।

अनमेल-विवाह रुकवाया

कोटली (मीरपुर) कश्मीर में प्रचार के दिनों श्री धर्मेन्दु जी के पास एक युवक रोता रोता आया कि मेरी बहिन को बचाईये। पूछने पर पता चला कि उसकी बहिन का आज ही विवाह एक बूढ़े से किया जा रहा है। कन्या ने जमाल गोटा पी लिया है उसकी अवस्था बिगड़ रही है। कन्या को समझा बुझा, उसके इलाज की व्यवस्था करा, उसके माता पिता को मनाकर श्री धर्मेन्दु जी ने १ वैद्य, १ डाक्टर तथा ३ प्रतिष्ठित व्यक्ति बारात के मार्ग में पड़ने वाली नदी पर यह पत्र देकर भेजे कि हम आपका स्वागत करते हैं परन्तु सुना गया है कि वर महोदय बड़ी आयु के तथा विवाह योग्य नहीं है। वर की जांच करा लेवें यदि आप न मानें तो बरात को भोजन, विश्रामादि तो हम करा देंगे परन्तु विवाह नहीं होगा।

बरात वाले हठ के कारण विना खाये पिये बैरंग लौट गए। तब उसी नगरी का एक योग्य वर कन्या पक्ष वालों को पसन्द करा कर उसी दिन बड़ी सादगी से श्री धर्मेन्दुजी ने पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार उस कन्या का विवाह करवा दिया।

सदुपयोग

धर्मेन्दुजी ने हमारे परामर्श पर अपनी ३ पुस्तकों १. वेद सन्देश २. ऋषि दयानन्द वचनामृत ३. वैदिक सूक्ति सुधा के निरन्तर प्रकाशनार्थ सार्वदेशिक सभा में २०००) (दो हजार
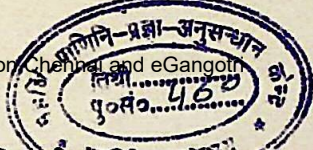
रुपये) की स्थिरनिधि कायम की थी जिसकी राशि उन्होंने अब ५०००) की कर दी है। इस प्रसंग में हमने कविवर स्व० पं० सिद्धगोपाल जी का उदाहरण प्रस्तुत किया था। वह हमारे मित्र थे। उनसे परिचय उस समय हुआ था जब कि वे दिल्ली जंकशन पर रैली ब्रदर्स की सर्विस में थे और सिगरेट बेचा करते थे। उन्होंने वह सर्विस छोड़कर आर्यसमाज में प्रवेश किया था और अपनी कवित्व प्रतिभा से अर्थ और यश दोनों ही प्रचुर मात्रा में अर्जित किए थे। एक बार उनसे भेंट होने पर उन्हें प्रेरणा की थी कि वे अपने पैसे की सुव्यवस्था कर देवें। वे इस प्रस्ताव से सहमत थे। उन्हें भय था कि आर्य समाज से अर्जित किए हुए पैसे का उनके उत्तराधिकारियों द्वारा दुरुपयोग न हो, क्योंकि वे विधुर व निस्सन्तान थे, परिवार में भाई भतीजे थे। जब-जब उनसे भेंट होती तब-तब इस कार्य को शीघ्र सम्पन्न कर देने की प्रेरणा करते थे और वे हर बार शीघ्र से शीघ्र इस कार्य को कर देने की बात कह देते थे परन्तु अपने जीवन काल में वे इस सम्बन्ध में कुछ न कर सके और उनके उत्तराधिकारियों द्वारा घोर दुरुपयोग हुआ और सिद्धगोपाल जी का भय सच्चा सिद्ध हुआ।

श्री धर्म्मेन्दु जी का भी कोई पार्थिव उत्तराधिकारी नहीं है। उनका उत्तराधिकारी आर्यसमाज है। उन्होंने अपनी समस्त सम्पत्ति की वसीयत भी आर्यसमाज को कर दी है।

उनके मानस उत्तराधिकारी आर्य कुमार हैं जिनके साथ उनका बड़ा ममत्व है और उनके निर्माण और उन्नति पर ही एक प्रकार से उनका जीवन अर्पित है। आर्यसमाज को सुशिक्षित, अनुशासित, हृदय और मस्तिष्क के गुणों से विभूषित अनेक

आर्य कुमार देने का उन्हें श्रेय प्राप्त है जो अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से आर्य समाज को चमकाते रहे हैं और अब भी चमका रहे हैं।

एक बार पण्डित जवाहरलाल नेहरू अकाल पीड़ित क्षेत्रों का दौरा कर रहे थे। लोगों की अपार भीड़ उनके दर्शनों के लिए एक स्थान पर एकत्र थी। उस भीड़ में एक छोटा बच्चा उनकी ओर टकटकी लगाए बैठा देख पड़ा। उसके नेत्रों के आकर्षण से अभिभूत हुए नेहरू ने लपककर उसे अपनी बाहों में ले लिया और उसे जी भरकर प्यार किया। उस क्षण उन्हें वह बालक मानस पुत्र के रूप में देख पड़ा। यदि धर्मेन्दु जी को आर्यकुमार मानस पुत्रों के रूप में देख पड़ें तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नही।

आर्य मिशनरी का आदर्श

एक नगर में जाति के बच्चों के हितैषी एक आर्य प्रचारक थे। उन्होंने उच्च पदस्थ राजकर्मचारियों के बच्चों को आर्य आदर्शों से परिचित करने और उन पर उन्हें ढालने का कार्य अपने हाथ में लिया हुआ था जिनकी शिक्षा प्रायः पब्लिक स्कूलों में होती थी। एक कर्मचारी के मकान पर जाते और उनके तथा पास-पड़ोस के बच्चों को एकत्र करके नियम से निःशुल्क १ घण्टा पढ़ाने का कार्य करते थे। ये बच्चे जाति की महान् विभूतियों यथा राम, कृष्ण तक के नाम से अपरिचित पाए जाते थे क्योंकि घरों में उनके नामों की कभी चर्चा न होती थी। बच्चों के अभिभावक बड़े प्रेम और उत्साह से इन क्लासों में अपने बच्चों को भेजते और प्रचारक महोदय के प्रति आभार प्रकट करते हुए कह दिया करते थे "इस प्रकार

की शिक्षा के अभाव में हमारा तो अहित हुआ ही बच्चों का अहित न होने देंगे।" बच्चों के सुधार और शिक्षण के प्रति धर्म्मेन्दु जी और उनकी पत्नी श्रीमती जावित्री देवी में यही मनोवृत्ति कार्यरत्त रही है। इतना ही नहीं उन्होंने यह परीक्षण स्वयं भी किया है जो अत्यधिक महत्त्व का ठोस प्रचार कार्य है।

सत्यार्थ प्रकाश

बन्धुवर प्रो. इन्द्रसेन जी की प्रेरणा पर जो धर्मेन्दु जी के मार्गदर्शक सखा थे, उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन किया। इससे पूर्व उनकी विचार एवं जीवन-धारा पौराणिकता से प्रभावित और प्रक्षालित थी। सत्यार्थ प्रकाश ने न जाने कितने असंख्य व्यक्तियों की जीवन धारा बदली और उसे स्वस्थ मोड़ दिया है। श्री धर्म्मेन्दु जी की जीवनधारा को भी सत्यार्थ प्रकाश ने स्वस्थ मोड़ दिया और वह भी उस समय जब कि उनका जीवन निरुद्देश्य था और वे ब्रह्मदेश में बस जाने के लिए यात्रार्थ तय्यार थे। इसी अध्ययन के फलस्वरूप वे ब्राह्म महाविद्यालय में प्रविष्ट हो गए। इससे पूर्व पिता की छत्रच्छाया में मिशन हाई स्कूल जेहलम में दसवीं क्लास तक की ही शिक्षा हो पाई थी। धर्म्मेन्दु जी को निराशा, खिन्नता और निरुपायता के गहरे गढ़े में धकेल कर वह छत्रच्छाया भी अचानक सदैव के लिए विलुप्त हो गई।

जीवन दर्शन

श्री पण्डित देवव्रत जी धर्म्मेन्दु का जन्म १३ अप्रैल १९०४ ई० वैसाखी के दिन जलालपुर कीकनां (जेहलम) पंजाब में हुआ। उनके पिता जी का नाम श्री मानकचन्द और माता जी का नाम श्रीमती रुक्मिणी देवी था। एक वर्ष की अवस्था में ही वे मातृ-स्नेह से वंचित हो गए थे। उनका पालन-पोषण ग्राम खुरद (जेहलम) में नाना नानी के पास हुआ था।

प्रारम्भिक पढ़ाई चोटाला में हुई। इसके बाद खालसा मिडिल स्कूल संघोई (जेहलम) में, मिशन हाई स्कूल जेहलम में और अन्त में ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर में हुई। लाहौर में आचार्य विश्वबन्धु, जी पण्डित रामगोपाल जी वैद्य, स्वामी नित्यानन्द जी, पण्डित फकीरचन्द जी तथा प्रो० मथुरादास जी के सान्निध्य में रहकर संस्कृत व धर्म्म ग्रन्थों का पूर्ण रूपेण अध्ययन किया जिसके फल स्वरूप उन्हें धर्म्मेन्दु की उपाधि से सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि खालसा मिडिल स्कूल में पढ़ते हुए स्कूल के ग्रन्थी ने उन्हें सिक्खी मत की ओर विशेष रूप से आकृष्ट किया था। फलतः वे सिक्ख मत के पूजा पाठ के अनुष्ठान करने लगे थे। ग्रन्थ साहब का अध्ययन करते और गुरुद्वारे भी जाते थे। एक सम्भ्रान्त सिक्ख परिवार ने उन्हें घर जमाई बनाना चाहा किन्तु केश धारण करने की उनकी शर्त आपने स्वीकार न की और सिक्ख ग्रन्थी के ढोंग को देखकर उस मत से आप उपराम हो गए।

अन्धकार से प्रकाश की ओर

शैशवावस्था में स्नेहमयी माता का,किशोरावस्था में पिता

और पालनकर्त्ता नाना-नानी का साया उठ जाने तथा नानी गृह से उनके रिश्तेदारों द्वारा नग्नावस्था में बलात् निकाल दिए जाने पर उनकी जीवन-नय्या संसार के अथाह समुद्र में पतवार विहीन हो गई। परन्तु प्रभु का वरद् अदृष्ट हाथ उस नौका को चट्टानों से चकनाचूर होने तथा बचाने के लिए क्रियारत था। धर्म्मेन्दु जी की जीवन-नौका सुरक्षित रूप से किनारे लग गई थी। उन्हें असहायावस्था में जिन कठिनाईयों एवं बाधाओं में से होकर गुजरना पड़ा उन्हें देख और सुनकर इस सत्य की अनुभूति हुए विना नहीं रह सकती कि सहायता और सुविधाएं ही वे तत्त्व नहीं होते जो मनुष्य को मनुष्य बनाते हैं अपितु कठिनाइयां और उनसे पार पाना ही मुख्यरूप से मनुष्य को मनुष्य वनाते हैं। जीवन के उस अन्धकार पक्ष में सौभाग्य छुपे २ मुस्करा रहा था और उज्ज्वल भविष्य का संकेत कर रहा था।

उद्बोधन

श्री प्रो० इन्द्रसेन जी के उद्बोधन की चर्चा करते हुए जिसके फलस्वरूप उनके जीवन की धारा बदली, श्री धर्मेन्दु जी अपने संस्मरणों में लिखते हैं:

"पांडेचेरी आश्रम के मेरे बचपन के मित्र श्री डा० इन्द्रसेन जी ने मुझे (गुरुदत्त भवन) लाहौर में ब्रह्मचर्य की महिमा बताई और कहा तुम्हारे पास समय है, कोई कुछ कहने वाला भी नहीं है पता नहीं फिर तुम धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन कर उनका जनता में प्रचार कर अपना जन्म सफल क्यों नहीं करते, मैं संस्कृत पढ़ना चाहता हूं पर मेरे माता-पिता रुकावट बने हुए हैं।"

इसी उद्बोधन ने धर्मेन्दु जी को ब्रह्मदेश के प्रवास से रोक कर ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर में भेजा था जिसके परिणाम स्वरूप देवव्रत महाविद्यालय के एक सुयोग्य स्नातक और आर्य समाज के उत्साही, कर्मठ और महर्षि दयानन्द की भावना से ओत-प्रोत और उनके कार्य को आगे बढ़ाने के व्रत को लेकर उत्ताम आर्योपदेष्टा के रूप में सामने आए।

गृहस्थ प्रवेश

हिमाचल, उत्तर प्रदेश राजस्थान आदि में अध्यापन एवं प्रचार कार्य करने तथा दिल्ली में स्थायी रूप से आ जाने पर १९३५ में आर्य गर्ल्स हायर सेकेण्डरी स्कूल चावड़ी बाजार दिल्ली की अध्यापिका श्रीमती जावित्री देवी (उषा रानी) के साथ उनका विवाह हुआ। यह देवी बड़ी धर्म परायणा, सेवा व्रती एवं सरल तथा मधुर स्वभाव की हैं। मानव के कर्त्तव्य-पालन में सहायक होना स्त्री का पुरुष के प्रति गहरे प्रेम का द्योतक होता है। श्रीमती जावित्री देवी धर्मेन्दु जी के सामाजिक दायित्वों की पूर्ति में सहायक रही हैं अतः उपर्युक्त कहावत उनपर भली भांति चरितार्थ होती है।

सेवाएं

श्री धर्मेन्दु जी की सेवाओं का श्री गणेश डी० ए० वी० मिडिल स्कूल ठियोग (हिमाचल प्रदेश) की हैडमास्टरी से सन् (१९२६) में हुआ। यहीं से उनकी प्रगतियों एवं क्षेत्रों का विस्तार हुआ और यह क्षेत्र पंजाब, राजस्थान, उत्तार प्रदेश और दिल्ली तक विस्तृत हुआ। श्री धर्मेन्दु जी (१९३३) में दिल्ली आए थे। तभी से दिल्ली उनका स्थायी निवास स्थान और उनकी सामाजिक प्रगतियों का केन्द्र स्थल बना हुआ है।

यहीं पर वे सन् १६३५ से लेकर १६६४ तक डी० ए० वी० हायर सेकेण्डरी स्कूल चित्र गुप्त रोड नई दिल्ली के धर्माध्यापक रहे। इस पदपर उनकी नियुक्ति मैनेजिग कमेटी ने उनके कृतित्व एवं योग्यता से प्रभावित होकर स्वयं उनसे पूछे विना ही की थी।

दिल्ली में ही हम उनके सीधे सम्पर्क में आए और उन्हें देखने तथा परखने का सुअवसर मिला। श्री धर्मेन्दु जी का दिल्ली के सामाजिक जीवन में स्थान है इतना ही नहीं आर्य जगत् भी उनके कृतित्व से परिचित एवं प्रभावित है।

अध्यापन कार्य के अतिरिक्त, नारी उद्धार, नारी कल्याण, शुद्धि, पिछड़े तथा दलित वर्ग का उत्थान, बाल कल्याण उनकी प्रगतियों के मुख्य केन्द्र बिन्दु रहे हैं। आर्य कुमारों का निर्माण और उत्थान अरसे से उनकी प्रगतियों का मुख्यतम केन्द्र बिन्दु बना हुआ है।

श्रीधर्मेन्दु कोरे आर्योपदेशक ही नहीं हैं उनमें प्रबन्ध पटुता और संघठन क्षमता भी कूट २ कर भरी है। महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा (१९२५), महर्षि दयानन्द निर्वाण अर्द्ध शताब्दी अजमेर (१९३३), हैदराबाद धर्म युद्ध (१९३९), सिन्ध सत्याग्रह (१९४५-४६), सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन (१९४४, १९६१) आदि की सफलताओं में उनका भी उल्लेखनीय योगदान रहा।

जैसा कि ऊपर कहा गया है आर्यकुमारों का निर्माण उन के जीवन का विशिष्ट ध्येय है। परीक्षाओं, निबन्ध एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताओं, पुरस्कारों, देश यात्राओं, शिक्षण शिविरों आदि के माध्यम से वे इस कार्य को करते और प्रगति देते हैं।

अखिल भारतीय स्तर की भारत वर्षीय आर्यकुमार परिषद् के साथ श्री धर्मेन्दु कई वर्ष तक सम्बद्ध रहे। उसके द्वारा संचालित परीक्षाओं के मन्त्री रहे (१९४०-४६ तक) और इन्हें अधिकाधिक लोक-प्रिय बनाने का श्रेय प्राप्त रहा। उनकी देख-रेख में, प्रबन्ध में, तथा अध्यक्षता में कई आर्य कुमार सम्मेलन हुए। १९४५, १९५३ में दिल्ली में हुए प्रान्तीय आर्य-कुमार सम्मेलन, मेरठ जिला आर्यकुमार सम्मेलन गुलावठी भारत वर्षीय आर्य कुमार सम्मेलन मुरादाबाद (उ० प्रदेश) विशेष उल्लेनीय है। इसने देश और समाज को अनेक सुयोग्य, लग्नशील कार्यकर्त्ता दिए। दुर्भाग्य से इसका सितारा अस्त हुआ परन्तु उसकी ज्योति को कायम रखने के लिए धर्मेन्दु जी ने विशेष प्रयास किया और आर्य युवक परिषद् के रूप में इस की भावना एवं कलेवर की प्रतिकृति को कायम रखे हुए हैं।

सर्वश्री महात्मा नारायण स्वामी जी, पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति, पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय, महात्मा आनन्द स्वामी जी (पूर्व ला० खुशहालचन्द जी) स्वामी ध्रुवानन्दजी सरस्वती (पूर्व राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री) बा० पूर्णचन्द जी एडवोकेट (पूर्व प्रधान सार्वदेशिक आ० प्र० सभा) प्रो० महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री, डा० परमात्मा शरण जी, पं० भगवान स्वरूप जी न्याय भूषण आदि २ महानुभावों ने परीक्षाओं के सुसंचालन पर हर्ष प्रकट करते हुए श्री धर्मेन्दु जी के प्रयासों की प्रशंसा की थी। कुछ सम्मतियां इस प्रकार हैं:—

"जब से भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् की धार्मिक परीक्षाओं के कार्य को श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु ने अपने हाथ में लिया है तब से इन परीक्षाओं का स्वरूप और भी उन्नत हो गया है।"

—नारायण स्वामी

परिषद् के वर्तमान परीक्षा मन्त्री श्री पं० देवव्रतजी धर्मेन्दु की लगन से ही इन परीक्षाओं के भविष्य में और भी अधिक उन्नत होने की आशा है।

—इन्द्र विद्यावाचस्पति

भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् के जन्मदाताओं में श्री स्व० डा० केशवदेव जी शास्त्री, श्री स्व० प्रो० सुधाकर जी (ये दोनों सज्जन वर्षों तक सार्वदेकि सभा के मन्त्री रहे थे) के नाम सर्वोपरि है। इसके पृष्ठ पोषकों और इसे जीवन देने वालों में श्री डा० युद्धवीर सिंह जी (दिल्ली) प्रो० परमात्मा शरण जी, श्री पं० सूर्यदेव शर्मा डी० लिट (अजमेर) प्रो० मुंशीराम जी (कानपुर) श्री स्व० देवी दयाल जी आदि अनेक आर्य श्रेष्ठि रहे हैं।

श्री धर्मेन्दु जी इस समय सार्वदेशिक सभा की विद्यार्य सभा की परीक्षाओं (आर्य सिद्धान्त भूषण, आर्य सिद्धान्त रत्न, एव आर्य सि० विशारद) के मन्त्री हैं जिनका कार्य वे तन्मयता से करते हैं।

सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड वह संस्थान है जिसकी नींव सभा मन्त्री श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के प्रस्ताव पर सत्साहित्य वृद्धि एव प्रचार के लिए सार्वदेशिक सभा ने रखी थी। इस समय सभा की ओर से इसके एक डाइरेक्टर सभा कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ (मरवाह) एडवोकेट हैं। श्री धर्मेन्दु जी अरसे से उसके अवैतनिक डाइरेक्टर तथा सार्वदेशिक प्रेस के अवैतनिक प्रबन्धक का कार्य कर रहे हैं।

लेख बद्ध प्रचार

श्री धर्मेन्दु जी का लेखबद्ध प्रचार भी विस्तृत तथा अच्छा

रहा है। दैनिक यज्ञ प्रकाश उन्हीं की कृति है जो लाखों की संख्या में सार्वदेशिक प्रकाशन की ओर से प्रचारित हो चुकी है और जिसकी देश-देशान्तर से सदैव मांग आती रहती है। इसके अतिरिक्त उनकी वेद सन्देश, वैदिक सूक्ति सुधा महर्षि दयानन्द वचनामृत आदि पुस्तकें भी वैदिक साहित्य के भंडार में मूल्यवान् वृद्धि है जिनके प्रकाशन का दायित्व एवं अधिकार उन्होंने स्थिर निधि कायम करके सार्वदेशिक सभा को सौंपा हुआ है। आर्य पत्र पत्रिकाओं में उनकी कृतियां प्रायः छपती रहती हैं।

आर्य भाषा (हिन्दी) की सेवा

श्री धर्मेन्दु जी सब काम हिन्दी में ही करते हैं। वे हिन्दी भाषा के समर्थक तथा सफल प्रचारक रहे हैं। वर्षों तक वे हिन्दी सभा दरियागंज (दिल्ली) के मन्त्री रहे। १९५६ में हिन्दी पार्क दरियागंज दिल्ली में मान्य जगजीवन राम जी ने सूर जयन्ती का उद्घाटन किया था जिसकी अध्यक्षता आगरा के श्री डा॰ सत्येन्द्र जी ने की थी। राष्ट्र कवि स्व॰ रामधारी सिंह दिनकर' की अध्यक्षता में सन् (१९५६) में कवि सम्मेलन हुआ था। इस आयोजन के संयोजक श्री धर्मेन्दु जी थे। स्व॰ श्री पुरुषोत्तमदास जी टण्डन ने दरियागंज मण्डल हिन्दी साहित्य सम्मेलन का उद्घाटन किया। धर्मेन्दु जी इस के भी मन्त्री थे। १९५७ के पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन में उनका हिन्दी प्रेम, उसकी हित चिन्ता और उसकी सफलता की कामना उनके अनथक परिश्रम, प्रयासों, दिल्ली में सत्याग्रहियों के आवासादि की सुव्यवस्था के योगदान में प्रतिलक्षित हुए थे।

कार्यों का संक्षिप्त विवरण

रेलवे की नौकरी का त्याग

धर्मेन्दुजी के चाचा रेलवे में थे उन्होंने इन्हें रेलवे में माल गुदाम में नौकर लगवा दिया। वहां रिश्वत का बोल वालाथा। सभी अपने-अपने काम में रिश्वत लेते थे रात को सभी मिल वांटते थे। गुदाम में से चौकीदार से मिलकर बोरियों में से चीनी, चावल, मेवे सब निकलवाते थे। बाढ़ ही खेत को खाती थी यह मन ही मन दुखी थे। तभी प्रिन्स आफ वेल्सन (जो बाद में आठवें अडवर्ड बने थे) भारत पधारे। कांग्रेस ने उन का पूर्ण बहिष्कार किया। इन्होंने उचित अवसर जानकर रेलवे नौकरी पर लात मार दी।

राष्ट्रीय आन्दोलन में

आपके जीवन में प्रारम्भ से ही राष्ट्रीय-भावना का अंकुर प्रच्छन्न रूप में विद्यमान था जो कालक्रम से अंकुरित होना प्रारम्भ हो गया। राष्ट्र-मुक्ति का आन्दोलन सर्वत्र जोरों पर था और इससे प्रेरित होकर आप भी इस आन्दोलन में, अपनी आहुति देने के लिए कूद पड़े। सर्व प्रथम आप 'नेहरू स्वयं सेवक दल' में प्रविष्ट हुए और बाद में अपनी क्रियाशीलता एवं कार्यनिष्ठा से दल के कैप्टेन हो गए। जेल जाने का खतरा हमेशा बना रहता था और इसके लिए आप सतत उद्यत भी रहते थे। इसलिए आप स्वयं चक्की पीसते, रोटी पकाते, चर्खा कातते और बान बटते थे जिससे जेल जाने पर कोई कठिनाई अनुभव न हो। अपने साथियों को भी ये काम करने के लिये आप सतत प्रेरणा देते रहते थे। यह सब काम आप

राष्ट्रीय गान गाते हुए करते थे। जिन दिनों की यह बात है वह असहयोग आन्दोलन का समय था।

१९२० के राष्ट्रीय आन्दोलन ने आप पर विशेष प्रभाव डाला। आप निर्भीकतापूवक अदम्य उत्साह से यत्र तत्र जा कर लोगों में राष्ट्रीय भावना भरते थे। रात्रि में आप का शयनस्थल कोई मन्दिर, मस्जिद, सराय या किसी परिचित का घर होता था। क्योंकि पुलिस हमेशा आप के पीछे पड़ी रहती थी। आप भी जेल जाने के लिए सदैव तत्पर रहते थे।

शिक्षा क्षेत्र में कार्य

दयानन्द विद्या प्रचारिणी सभा शिमला के प्रधान श्री डा० केदारनाथ जी ने आपको डी. ए. वी. मिडिल स्कूल ठियोग (शिमला से १८ मील दूर तिब्बत रोड पर) में प्रधानाध्यापक के पद पर नियुक्त कर दिया। कुछ वर्षों तक वहां कार्य करने के पश्चात् दयानन्द अमर प्रकाश मिडिल स्कूल पछाद (नाहन) में भेजे गये। अध्यापन कार्य के साथ-साथ आप आर्य मिशनरी के रूप में पर्वतीय ग्रामों में पैदल घूम-घूम कर प्रचार भी करते रहे। आपने वैदिक साहित्य प्रचार मण्डल स्थापित कर सहस्रों ट्रैक्ट सस्ते तथा बिना मूल्य जनता में प्रचारार्थं वितरित किये।

आपने दयानन्द के अमरग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' की दो हजार प्रतियां ब्राह्मण परिवारों में केवल दो दो आने में वितरित कीं। उस क्षेत्र के बड़े-बड़े मेलों में, विशेषत: सी. पी. मेला मशोवरा, लवी मेला, रामपुर बुशैहर, रेणुका माईका मेला नाहन आदि में, सप्ताहों ठहर कर आप प्रचार करते रहे। अध्यापन काल में महाराजा पटियाला, महाराजा नाहन

राणा साहब व टीका साहब ठियोग, गवर्नर पंजाब सर मेलकम हेली, तथा वायसराय लार्ड इर्विन व अन्य उच्च अधिकारियों को अपना विद्यालय दिखा कर आपने प्रशंसा-पत्र प्राप्त किये।

आप प्रारम्भ से ही सिपाही रहे हैं। नेतृत्व की लिप्सा से आप हमेशा ही दूर रहे। इसलिए जहां भी आपको जिस कार्य के लिए भेजा गया आपने तन-मन से उस कर्त्तव्य का पालन किया। नयी दिल्ली के स्कूल में 'धर्माध्यापक' पद पर नियुक्ति भी इसी कर्त्तव्य पालन की एक कड़ी थी।

जब डी.ए.वी. स्कूल की प्रबन्ध समिति ने स्कूल में 'धर्माध्यापक' पद पर नियुक्ति की सूचना आपको दी तो आप बहुत प्रसन्न हुए आपकी प्रसन्नता का मुख्य कारण यह था कि आप पहले एकांगी धर्म-प्रचार का कार्य करते थे, किन्तु अब शिक्षण कार्य के साथ-साथ दो हजार बच्चों द्वारा दो हजार परिवारों में धर्म, वेद और आर्यसमाज का सन्देश आसानी से पहुंचा सकेंगे।

"बच्चे ही राष्ट्र की उन्नति और प्रगति के साधन हैं, उन का निर्माण ही राष्ट्र-निर्माण है" यह सोच कर आप बच्चों के मानसिक एवं चारित्रिक विकास में जी-जान से जुट गये और लगातार ४० वर्षों तक नियमित रूप से अध्यापन एवं प्रचार-कार्य में निरत रहे। स्कूल में आपने 'आर्य कुमार सभा' का संचालन बहुत सफलतापूर्वक किया। बच्चों में सतत चरित्र-निर्माण, सुसंस्कार, परोपकार और समाजसेवा का भाव भरते रहे।

छात्रों को केवल परीक्षा के लिए तैयार करना ही आपका लक्ष्य नहीं था। आप तो उन्हें व्यवहार-कुशल, वाक् पटु और वक्ता बनाना चाहते थे। इसलिए स्कूल के अतिरिक्त समय में उन्हें आप प्रतियोगिताओं और धर्म परीक्षाओं के लिए तैयार करते थे तथा उन्हें पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र देकर भी प्रोत्साहित करते थे।

बच्चों को ऐतिहासिक और भौगोलिक स्थानों से साक्षात् परिचय कराने तथा प्राकृतिक वस्तुओं का ज्ञान कराने के लिए उन्हें शिमला, चंडीगढ़, रोपड़, नांगल, मथुरा वृन्दावन, आगरा आदि स्थानों पर ले जाते थे। इससे बच्चों के चरित्र निर्माण पर बहुत अच्छा असर पड़ता था। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आदि स्थानपर शिविरों का भी आयोजन करते रहे जहां अहर्निश अपनी देख-रेख में बच्चों को रखते थे। शिविर की विशेषता यह थी कि उसमें ऊंच नीच, जात पात का कोई भेद-भाव नहीं रहता था। 'ग्राम प्रचार मण्डली' बनाकर दिल्ली के आस-पास के गांवों में सफाई, समाज-सुधार तथा धर्म प्रचार के लिए भी प्रायः जाया करते थे।

आपको बच्चों की टोलियां बाहर ले जाने में कोई कठिनाई भी नहीं होती थी, क्योंकि बच्चे आपके स्नेह और प्यार से अभिभूत होकर सदैव आपके साथ बाहर घूमने को लालायित रहते थे और बच्चों के अभिभावक आपके आचरण एव व्यवहार से इतने प्रभावित थे कि वे अपने बच्चों को आपके साथ बाहर भेजने के लिए उत्सुक रहते थे। यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि बच्चों को आपमें पितृस्नेह मिलता था और उनके अभिभावक आपको अपना सुहृद समझते थे।

पिछड़े वर्गों की सेवा

लार्ड मेकडानल्ड ने अछूतों को हिन्दुओं से अलग रखने का प्रयास किया था जिसके विरोध में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने २१ दिन का प्रथम आमरण अनशन प्रारम्भ किया था। गांधी जी के आमरण व्रत के दिनों में ही अछूतोद्धार-आन्दोलन में भाग लेने के लिए धर्मेन्दुजी शिमला से दिल्ली पहुंचे और लाला लाजपतराय जी द्वारा स्थापित दलितोद्धार सभा में उपदेशक के पद पर सक्रिय रूप से कार्य करने लगे। श्रमजीवी आश्रम के संचालन का भार भी आपको सौंप दिया गया। आपके पुरुषार्थ से आश्रम की उन्नति के साथ-साथ जंगपुरा एवं नयी दिल्ली में दो हरिजन पाठशालाएं भी खुल गयीं। हरिजन बेबी शो का आयोजन कर सफाई तथा स्वास्थ्य के लिए नकद पारितोषिक, वस्त्र, साबुन, मिठाई आदि वितरित करते रहे। नांगलोई में हरिजनों को कुएं पर चढ़ना वर्जित कर दिया गया था। आपने हरिजनों को कुएं पर चढ़ने का अधिकार दिलाकर समाज-सुधारक होने का परिचय दिया।

नयी दिल्ली में श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर जब बनकर तैयार हो गया तो यह प्रश्न उठा कि इसमें प्रवेश का अधिकार किसे हो। मन्दिर के प्रबन्धकों ने निश्चय किया कि इसमें केवल सवर्ण हिन्दू ही प्रवेश पा सकेंगे। श्री धर्मेन्दुजी उस समय दिल्ली में ही हरिजनोद्धार के कार्य में संलग्न थे। जब उन्हें मन्दिर के उक्त निर्णय की सूचना मिली तो आप उनसे मिले और निवेदन किया कि आप लोगों का यह निर्णय उचित नहीं है और ऐसा करने से सनातनधर्मी नेताओं—गोस्वामी गणेशदत्त जी, पंडित नेकीराम जी शर्मा, मालवीयजी आदि को पर्याप्त क्लेश होगा।

इसलिए आप लोग यदि इस मन्दिर को मानवमात्र के लिए खोल दें तो इससे मन्दिर की लोकप्रियता तो बढ़ेगी ही साथ में सब को प्रसन्नता भी होगी। उन लोगों ने धर्मेन्दु जी के इस आग्रह को स्वीकार कर लिया और मन्दि आज मानवमात्र के लिए खुला है।

आपने गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया ही था कि रामपुर रियासत से डा० मुरारीलालजी का इस आशय का तार मिला कि रामपुर के नवाब का भाई दो हजार हरिजनों को मुसलमान बनाने का षडयन्त्र कर रहा है। तार देखते ही आप अविलम्ब रामपुर पहुंच गए। वहां सर्वदलीय प्रेमसभा का गठन कर आपने दो मास तक लगातार घूम कर धर्म प्रचार किया। इससे हजारों हरिजन मुसलमान होने से बच गये।

नवाब के भाई ने सारी रियासत में हिन्दुओं पर दमन-चक्र चला रखा था। सब हिन्दू उसके भय से त्राहि त्राहि कर रहे थे। सर्वत्र आतंक और त्रास फैला हुआ था। किन्तु आपके आगमन से हिन्दुओं में ढाढस बंधा तथा वे पूर्ववत् सिर उठा कर चलने लगे। नवाब के भाई को जब आपके बारे में पता चला तो उसने आपको रियासत से बाहर करने की जी-तोड़ कोशिश की, लेकिन हिन्दू जनता के सहयोग के कारण आप उस रियासत में तब तक डटे रहे जब तक कि हिन्दुओं का कष्ट से उद्धार न हो गया। आपकी इस निर्भीकता, अदम्य उत्साह अटूट साहस तथा लगन की सभी वर्गों द्वारा सराहना की गयी।

शुद्धि-कार्य

श्रद्धेय महात्मा हंसराज जी और स्वामी श्रद्धानन्द जी के

आह्वान पर फरुखाबाद (उत्तर प्रदेश) के इलाके में स्वामी चिदानन्द जी के साथ मिलकर आप कुछ काल तक गांव-गांव में पैदल घूमे और हजारों मलकानों को शुद्ध कर आपने उन्हें वैदिक धर्म की दीक्षा दी। मलकाने वे हिन्दू राजपूत थे जो मुस्लिम शासन काल में जबरदस्ती चोटी और जनेऊ काटने मात्र से मुसलमान घोषित कर दिये गए थे। जब जब समय मिला आपने ऐसे अनगिनत हिन्दू भाइयों को पुनः हिन्दू धर्म में प्रविष्ट कराया जो भय, लोभ अथवा अन्य कारणों से ईसाई एवं अन्य विजातीय धर्म को अंगीकार कर चुके थे।

हिमाचल प्रदेश में प्रचार

वास्तव में हिमाचल प्रदेश में आप एक महान् उद्देश्य और मिशन से गये थे। उन दिनों कोटगढ़ (शिमला) में अमरीका का ईसाई पादरी स्टोक्स भारी संख्या में हिन्दुओं को ईसाई बनाने में २० वर्ष से संलग्न था। उसने वहां ईसाई मत का गढ़ बना लिया था।

पादरी स्टोक्स को इस जघन्य कार्य से रोकने और हिन्दुओं को ईसाई बनने से बचाने के लिए आपने हिमाचल प्रदेश में पदार्पण किया तथा आपको इसमें काफी सफलता भी मिली। ठियोग तथा पच्छाद में शिक्षा-प्रसार के साथ-साथ आपने पर्याप्त धर्म प्रचार भी किया। इसके परिणाम स्वरूप हिन्दुओं को ईसाई बनाना रुक गया और जो हिन्दू ईसाई बन गए थे उनमें से अधिकांश फिर हिन्दू धर्म में आ मिले। आपने गांव-गांव में घूम कर भारी संख्या में आर्य साहित्य न्यूनतम मूल्यों पर तथा निःशुल्क भी बांटा।

रिक्शाकुलियों में हिन्दी प्रचार

सरदी के मौसम में शिमला में हजारों की संख्या में रिक्शा कुली गप्पें मारते, एक-दूसरे की निन्दा करते ताश खेलते, गुड़-गुड़ी पीते तथा समय को नष्ट करते रहते थे। धर्मेन्दु जी को यह बात बहुत अखरी। उन्होंने सरदी के महीनों में रिक्शा स्टैंडों पर जाकर कुलियों में हिन्दी-प्रचार शुरू कर दिया और उन्हें पुस्तकें, कापी, पेन्सिल आदि मुफ्त देने लगे। इन कुलियों को सही मार्ग पर लाने में धर्मेन्दुजी को काफी कार्य करना पड़ा, और अन्त में आपको बहुत हद तक सफलता मिल गयी। ये रिक्शा कुली अक्षर ज्ञान के फलस्वरूप बहुत सभ्य हो गये और आर्यसमाज के सदस्य बनकर सत्संगों में भी जाने लगे। हुक्का पीना, ताश खेलना तथा नशा आदि करना भी बहुतों ने छोड़ दिया। श्री धर्मेन्दु जी की यह बड़ी सफलता थी।

आपने विद्यालय में अवकाश के दिनों में बच्चों से पत्रों पर पते हिन्दी में लिखने की प्रेरणा की, गोल डाकखाने में हिन्दी में मनिआर्डर भेजा, क्लर्क ने इनकार किया। पोस्ट मास्टर ने भी लिख दिया कि इस प्रान्त की भाषा हिन्दी नहीं है। ऊपर तक शिकायत की तब हिन्दी में ही मनिआर्डर स्वीकार हुआ।

सनातनधर्मियों में लोकप्रियता

श्री धर्मेन्दुजी को अगर अजातशत्रु कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आर्यसमाज की विचारधारा रखते हुए भी आप सनातन धर्मावलम्बियों में पर्याप्त लोकप्रिय हैं। इसका मुख्य कारण है आपका मण्डनात्मक दृष्टिकोण। आप अपने भाषणों में कभी ऐसी बात नहीं कहते जिससे अन्य मतानुयायियों को मानसिक क्लेश हो। इसी कारण आप

सनातन धर्मियों में भी उतने ही लोकप्रिय हैं जितना कि आर्यसमाज के क्षेत्र में। इतना ही नहीं, सनातनधर्मी विद्वान्, जब तब आप को अपने मंच से धार्मिक भाषण देने के लिए बुलाते रहते हैं। यह सब आपकी सामंजस्य पूर्ण युक्ति और तर्क का प्रभाव है।

शिमला में ही एक समय की बात है कि चौधरी वंशीलाल एम० एल० सी० (पंजाब) शिमला पधारे और हरिजनों ने उनका स्वागत-जलूस निकाला। उसी अवसर पर चौधरी साहब ने घोषणा की कि मैं हरिजनों को साथ लेकर गंजमंडी के सनातन धर्म मन्दिर में प्रवेश करूंगा। उस घोषणा से सनातनधर्मियों में तहलका मच गया। उन लोगों की दृष्टि श्री धर्मेन्दुजी की ओर गयी, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि उन्हें इस संकट से धर्मेन्दुजी ही पार उतार सकते हैं। शिमला के प्रमुख कपड़ा व्यापारी और सनातनधर्मियों के अग्रणी लाला कशमीरीलाल ने इस सम्बन्ध में धर्मेन्दु जी से परामर्श किया। आपने लाला जी को सत्परामर्श दिया कि आप तुरन्त डोंडी पिटवा दें कि सनातनधर्म मन्दिर मानवमात्र के लिए खुला है। लालाजी को यह परामर्श बहुत पसन्द आया और उन्होंने इसी के अनुसार कार्य किया। फलस्वरूप वहां कोई हरिजन नहीं आया और इस प्रकार एक भारी संकट टल गया। इस स्तुत्य कार्य के लिए लाला जी धर्मेन्दु जी के अन्त तक आभारी रहे।

सामाजिक सेवाएं

समाज-सेवा भी आपके जीवन का एक मुख्य अंग रहा है। आपको धर्म-प्रचार से जब भी समय मिलता आप समाज सेवा में जुट जाते थे। फलस्वरूप आप वर्षों आर्य समाज बाजार

सीताराम, बेयर्ड रोड, आर्य केन्द्रीय सभा तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा के सदस्य एवं पदाधिकारी रहे। अन्य अनेक संस्थाओं के प्रधान, संचालक तथा संस्थापक भी रहे हैं। आप की देख-रेख में नई दिल्ली में "पवित्र होली मेला" वर्षों तक शिष्टता, सभ्यता और पवित्रता से मनाया जाता रहा। वह बहुत ही मनोरंजक और चित्ताकर्षक होता था। इस अवसर पर डी० ए० वी० हायर सेकेण्डरी स्कूल (चित्रगुप्त रोड) में नवशस्येष्टि यज्ञ, सन्ध्या-प्रार्थना, गायन, कविता, फैन्सी ड्रेस शो, खेल और कुश्तियों का आयोजन होता था।

डा० भगवानदास जी(वाराणसी) के सभापतित्व में १९५२ में १ मार्च से ३ मार्च तक भारतीय संस्कृति सम्मेलन का चतुर्थ अधिवेशन दिल्ली में सम्पन्न हुआ। श्री धर्मेन्दुजी उसके प्रचार मन्त्री थे। आपके अनथक परिश्रम, उत्साह और लगन से यह सम्मेलन अभूतपूर्व सफलता से सम्पन्न हुआ।

इतना ही नहीं, धर्मेन्दु जी ने सीकर सहायक समिति के मन्त्री रहकर 'सीकर' की जनता को अधिकार दिलाने का स्तुत्य कार्य भी किया।

हैदराबाद-सत्याग्रह

हैदराबाद के हिन्दुओं को निजामशाही के क्रूर एवं पाशविक अत्याचारों से त्राण दिलाने के लिए आर्यसमाज मैदान में कूद पड़ा और उसने हैदराबाद में १९३९ में सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया।

महात्मा नारायण स्वामी इस सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी चुने गए। धर्मेन्दु जी उस सत्याग्रह में सक्रिय भाग लेने

को आतुर हो उठे। उन्होंने नारायण स्वामी जी से साथ ले चलने की प्रार्थना की और साथ ही स्कूल की प्रबन्ध समिति से भी छुट्टी देने का आग्रह किया। आपने प्रबन्ध समिति से यह भी स्पष्ट कर दिया कि अगर उन्हें हैदराबाद जाने के लिए छुट्टी नहीं दी गई तो स्कूल से उनका त्यागपत्र ही समझें।

किन्तु नारायण स्वामी जी ने आपसे अनुरोध किया कि आप हैदराबाद जाने के बजाय दिल्ली में ही रहें और यहीं से सत्याग्रह में योग दें। स्कूल की प्रबन्ध समिति ने भी आपकी ६ मास की सवैतनिक छुट्टी स्वीकार कर अपनी उदारता एवं सदाशयता का परिचय दिया।

फलस्वरूप आपको दिल्ली में सत्याग्रह समिति का मन्त्री नियुक्त किया गया। आप खाना-पीना भूल कर प्रातः ४ बजे से रात के १२ बजे तक काम में जुटे रहते थे। दिल्ली से सत्याग्रही जत्थों को भेजने तथा उनके मार्ग व्यय की व्यवस्था करने का भार आप पर ही था। आपकी इस लगन और उत्साह ने सत्याग्रह में प्राण फूंक दिये। सत्याग्रह ने ऐसा विकराल रूप धारण किया कि उसने लोह सदृश कठोर एवं अहंकारी निजाम को अन्ततः घुटने टिका ही दिये। यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि इस धर्म युद्ध में आपका योगदान बड़ा मूल्यवान रहा। आर्य नेताओं ने आपकी लगन तथा संगठन शक्ति की भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्री घनश्यामसिंह गुप्त ने तो आपकी प्रबन्ध शक्ति और व्यवस्था की मुक्त-कण्ठ से सराहना की थी।

ऋषि निर्वाण अर्द्धशताब्दी

१९३३में अजमेर में ऋषि निर्वाण अर्द्ध शताब्दी के अवसर पर दीवान हरविलास जी शारदा ने आपको प्रचार तथा धन-संग्रह का कार्य सौंपा। आपने दिल्ली, उत्तर प्रदेश,पंजाब तथा सीमा प्रान्त आदि में लगातार दो मास तक तूफानी दौरा कर प्रचार व धन संग्रह का कार्य बड़ी कुशलता, परिश्रम व उत्साह से किया। साथ ही आप लोगों को इस समारोह में हजारों की संख्या में सम्मिलित कराने में भी सफल हुए।

परीक्षाओं का आयोजन

अंग्रेजी शासन ने भारतीय संस्कृति-सभ्यता और रीति-रिवाजों पर तो आघात पहुंचाया ही उसने भारतीय प्राचीन शिक्षा-पद्धति के मूल पर भी कुठाराघात किया। जहां प्रारम्भ में ही 'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव' की शिक्षा बच्चों को दी जाती थी वहां अब बच्चे पाश्चात्य दूषित शिक्षा में रंगकर अविनीत, अशिष्ट और उद्धत हो गए।

इसी दुःखद स्थिति से विकल होकर श्री धर्मेन्दु जी छात्रों में भारतीय धर्म-कर्म मूलक भावना को भरने की ओर अग्रसर हुए। आपने संकल्प किया कि जिस विषाक्त पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली ने भारतीय युवकों के हृदयतल को दूषित कर दिया है उसे वे भारतीय ऋषि-मुनियों के वचनामृत से सींचकर पुनः परिष्कृत करके ही दम लेंगे। इसमें आपको बहुत कुछ सफलता भी मिली। इसके लिए आपने आर्य पद्धति की परीक्षाएं प्रारम्भ कीं। १९४० से १९४६ तक आप भारतवींय आर्य कुमार परिषद् के परीक्षामन्त्री भी रहे। आपने परीक्षाओं को

नया रूप देकर बड़े उत्साह, परिश्रम और निष्ठा से परीक्षाओं का संचालन किया। आपके समय में हजारों छात्र प्रतिवर्ष परीक्षाएं देते रहे।

सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन

१९४४ में स्व० डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी की अध्यक्षता में पंचम आर्य महासम्मेलन दिल्ली में सम्पन्न हुआ। आप उसके प्रचारमन्त्री निर्वाचित हुए। सम्मेलन को अभूतपूर्व सफलता मिली इसका भी मुख्य श्रेय आपको ही है। क्योंकि आपने इस के लिए दिन-रात सुगठित प्रचार कार्य किया था।

जब सिंध की मुस्लिम लीगी सरकार ने सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने की घृणित योजना बनायी तो आपने यद्यपि उस सत्याग्रह में सदेह भाग नहीं लिया फिर भी उसे सफल बनाने के लिए आप दिल्ली में ही सक्रिय रहे। यत्र-तत्र स्वाध्याय केन्द्रों की स्थापना करके आपने लगभग दो हजार सत्यार्थप्रकाश रखवा दिये जिससे इस ग्रन्थ का अध्ययन कर लोग इसकी रक्षार्थ तत्पर होसकें। आपका यह प्रयास बहुत ही लाभदायक तथा स्थायी रहा।

३० अक्टूबर १९४४ को गढ़मुक्तेश्वर मेले में आपकी अध्यक्षता में 'सत्यार्थप्रकाश' सम्मेलन हुआ जिसमें हजारों नर-नारियों ने इस ग्रन्थ के स्वाध्याय एवं रक्षा का व्रत लिया।

आर्य कुमार सम्मेलन

१९४५ में दिल्ली प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन हुआ। आप उसके स्वागत मन्त्री थे। धन, जन और कार्य की दृष्टि से

यह सम्मेलन अभूतपूर्व रहा। १९५३ में भी आर्य कुमार सम्मेलन के आप स्वागताध्यक्ष चुने गए। आपका भाषण आर्य कुमारों के लिए बड़ा ही महत्वपूर्ण, शिक्षाप्रद, प्रेरणाप्रद और उत्साहवर्द्धक रहा।

आपकी अध्यक्षता में ही मेरठ जिला आर्य कुमार सम्मेलन १३ जून, १९४५ को गुलावठी (बुलन्दशहर) में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आपने अध्यक्षीय भाषण में कहा—'आर्य कुमार सभाओं की सफलता इसी मे है कि उनके आर्य कुमार रंग-ढंग, चाल-ढाल और बातचीत से पहचान लिए जाएं। ब्रह्मचर्य का तेज उनके मुखमण्डल पर हो। नम्रता, शालीनता, अनुशासन, सच्चाई, ईमानदारी, शुचिता आदि गुण उनके दैनिक जीवन के अंग हों।

लोकसेवा के क्षेत्र में

धर्म, शिक्षा, संस्कृति और समाज के क्षेत्रों में पण्डित धर्मेन्दु जी का अनथक प्रचार-प्रसार कार्य यथावत् जारी है। यद्यपि आपने १२ अप्रैल, १९६४ को अपने स्कूल की धर्माध्यापन सेवाओं से ससम्मान अवकाश ले लिया है फिर भी शिक्षा क्षेत्र से आप विरत नहीं हुए हैं। तथ्य तो यह है कि स्कूल से अवकाश प्राप्ति के बाद से इन क्षेत्रों में आपकी गतिविधि और भी तेज हो गयी है। प्रारम्भ से ही आप सदाचारी, सच्चरित्र, संयमी और सदाशय रहे हैं इसका प्रभाव आपके मन, मस्तिष्क और स्वास्थ्य पर पड़ना स्वाभाविक था। यही कारण है कि भगवत्कृपासे ७३ वर्ष की आयु में आपका मन नियन्त्रित, मस्तिष्क सन्तुलित और शरीर स्वस्थ है। अब आपका सारा समय वेदादि ग्रन्थों के स्वाध्याय, धर्म-प्रचार, सामाजिक

सेवा तथा लेखन कार्यों में व्यतीत हो रहा है। आर्यसमाजों तथा अन्य संस्थाओं के लोग किसी न किसी कार्य मे आपको सतत घेरे ही रहते हैं।

आप वर्षों से आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष हैं माननीय चौधरी देशराज जी की धर्मपत्नी स्व० श्रीमती चन्द्रवती चौधरी की स्मृति में बने स्मारक ट्रस्ट के आप ट्रस्टी एवं प्रतियोगिता मन्त्री हैं और प्रति वर्ष छात्रछात्राओं के निबन्ध, भाषण, वाद विवाद तथा भिन्न-भिन्न तरह के व्यक्तिगत खेलों एवं सामूहिक मैचों को आप बड़ी सफलता से सम्पन्न कराते हैं। विजेता संस्थाओं को १५ रजत-चलविजयोपहार तथा एक हजार रु० से भी अधिक के पारि-तोषिक प्रतिवर्ष दिये जातेहैं। यह समारोह प्रति-वर्ष ५ जुलाई को धूम धाम से सूर्य पर्वत में सम्पन्न होता हैं।

माननीय नवनीतलाल जी एडवोकेट की धर्मपत्नी स्वर्गीया श्रीमती सत्यप्रिया स्मारक समिति के भी आप मन्त्री हैं। प्रतिवर्ष सत्यप्रिया जी का जन्म दिवस १७ मई को मनाया जाता है। इस अवसर पर विभिन्न संस्थाओं को दान दिये जाते हैं और दस कन्या शिक्षण संस्थाओं में सहायता की पात्र, मेधावी तथा धार्मिक विचारों वाली एक एक कन्या को १०)-१०) की मासिक छात्रवृत्ति भी प्रतिवर्ष दी जाती है।

धर्मग्रन्थों के प्रचार-प्रसार में आपकी बड़ी रुचि है। इस कार्य में अपना समय और धन लगाने में आप सदैव तत्पर रहते हैं। दिल्ली तथा देश के अन्य भागों में आप आर्य समाजों आर्य स्त्री समाजों, आर्य कुमार सभाओं और आर्य युवक समाजों के वार्षिकोत्सवों, साप्ताहिक सत्संगों, पारिवारिक तथा विशेष सत्संगों में प्रवचन के लिए सदैव आमन्त्रित किये

जाते हैं। विशेष यज्ञों, शुभ संस्कारों, कथाओं तथा अन्य धार्मिक आयोजनों में भी आप भाग लेते रहते हैं।

वस्तुतः आप सीमित कार्यक्षेत्र से लोकसेवा के विशाल कार्यक्षेत्र में प्रविष्ट हो गये हैं। आपने अब अपना जीवन धर्म और समाज के लिए पूर्णरूपेण समर्पित कर दिया है।

दान का व्यसन

श्री धर्मेन्दु जी प्रारम्भ से ही इस विचार के रहे हैं कि द्रव्य का सदुपयोग सत्पात्रों एवं अच्छी संस्थाओं की सहायता करना ही है। आप सदैव स्वअर्जित राशि से सहर्ष संस्थाओं एवं व्यक्तियों को सहायता देते रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य बाल गृह, आर्य कन्या सदन, चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर, चन्द्रवती स्मारक ट्रस्ट, आर्य कुमार सभा नई दिल्ली, विश्वेश्वरा नन्द वैदिक शोध संस्थान, आर्य युवक परिषद, आर्य समाज कन्या वि० चावड़ी बाजार आदर्श धर्मार्थ ट्रस्ट तथा श्री राम दरबार आदि संस्थाओं को हजारों रुपये आप दान दे चुके हैं।

आप ने अपने निजी पुस्तकालय से १५० से अधिक अमूल्य धर्म ग्रन्थ चारों वेद (भाष्य सहित), सारी उपनिषदें, रामायण (दस भागों में), महाभारत, दर्शन आदि ग्रन्थ आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा मन्दिर मार्ग नयी दिल्ली को उपदेशकों के स्वाध्याय करने के लिए, पुस्तकालयार्थ दान में दे दिये हैं।

बच्चों को उत्साहित करने के लिए आप सदैव अपने पास से उन्हें पुस्तकें आदि भी देते रहते हैं। महात्मा हंसराज शिक्षा बोर्ड नयी दिल्ली, हिन्दी साहित्य सम्मेलन दरियागंज, दिल्ली साहित्य संगम तथा आर्य युवक परिषद को भाषण तथा वाद-

विवाद प्रतियोगिताएं कराने के लिए "धर्मेन्दुचल वैजयन्तियां" भी दे रखी हैं।

आपकी प्रवृत्ति चिन्तन व मननशील है। आप युवकोपयोगी लेख आदि लिख कर समय समय पर आर्य पत्रों में भी छपवाते रहते हैं।

जीवन की धूप छाँह

श्री धर्म्मेन्दुजी को अपने कार्य के सम्पादन में वैदिक धर्म्म एवं संस्कृति के प्रचार और प्रसार में अनेक कठिनाइयों, बाधाओं और खतरों में से गुजरना पड़ा है। आर्य मिशनरी का कार्य प्रायः कण्टकाकीर्ण रहता ही है। धर्म्मेन्दु जी भी इसके अपवाद नहीं रहे। उन्हें समय २ पर सुखद और दुःखद अनुभव भी हुए जिनकी एक हल्की झांकी उनके निम्नांकित संस्मरणों से सहज ही मिल जाती है :—

भूली बिसरी यादें

न इधर के रहे न उधर के रहे

बालपन में मुझे अपनी माता का प्यार नहीं मिला बहिन भाई भी कोई न था। पिता की छत्रच्छाया भी शीघ्र ही उठ गई थी! विधवा नानी ने पाला पोसा परन्तु उसके स्वर्ग सिधारते ही उसके देवर जेठों ने मुझे बाजू पकड़ कर नङ्गा-धड़ङ्गा घर से बाहर कर दिया पितृ कुल में भी जन्म लेना मात्र ही मुझे प्राप्त हुआ। न नानके से न दादके से मुझे कुच्छ प्राप्त हुआ। मैं जो कुछ बना हूं प्रभु की कृपा से ही बना हूं।

अनोखी समाज में

मुझे शिमला तथा कोटली (मीरपुर) दो जगहों के निमन्त्रण प्राप्त थे। महात्मा हंसराजजी से मैंने पूछा दोनों में से कौन सी जगह जाऊं ? हंसकर बोले :—

'दोनों जगह चले जावो" मैंने प्राथना की कैसे, तो कहने लगे गुरु नानक जी की तरह आंखें वन्द करके मन से पहुंच जाओ। अन्त में दो मास के लिए मुझे कोटली भेज दिया गया। आर्यसमाज मन्दिर कोटली में पहले दिन एक देवी प्रातः मेरे लिए फल लाई और कहने लगी सनातनी फल छोड़ देवें बाकी खा लेवें। मेरे पूछने पर उसने कहा कि इधर हम सड़े गलों को सनातनी कहते हैं। कोटली में समाज मन्दिर सातों दिन खुला रहता था महिलाओं का सत्संग, बृद्ध पुरुषों का सत्संग, कन्याओं का सत्संग, कुमारों का सत्संग, वृद्ध देवियों का सत्संग, युवकों का सत्संग और रविवार को सब का सम्मिलित सत्संग होता था। दो मासों के लिए १२० परिवारों ने प्रातः और सायं कालीन आतिथ्य के लिए अपने नाम मेरे पहुंचने से पहले ही समाज में लिखवा रखे थे।

मेरे खट्टे मीठे अनुभव

फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) में एक दिन मैं शुद्धि के लिए किसी गांव में गया हुआ था। मेरे पीछे मन्दिर में एक पच्चीस व्यक्तियों का नव मुस्लिम परिवार शुद्धि के लिए पहुंचा मेरे सेवक ने इन्हें स्नानादि करवा पुरुषों की दाढ़ी बाल कटवा हवन कुण्ड के पास बिठा कर सामग्री और घृत की आहुति देने को कहा। मन्त्र वह जानता नहीं था उसने नये मन्त्र बना

अपनी भाषा में 'हिन्दू बने स्वाहा" कह कर आहुतियां दिला उन्हें शुद्ध कर दिया।

मैं अकेला पांच बराबर

ठाकुर लालसिंह ने इच्छा प्रकट की कि वह ५ ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहते हैं मैं भी भोजन स्वीकार करूं। दूसरे दिन दुःखी मन से आकर कहा कि कोई ब्राह्मण निमन्त्रण स्वीकार नहीं कर रहा कारण यह बताया कि जिस २ को पता चला है कि शुद्धि वाले पण्डित भी भोजन करेंगे उन्होंने इनकार कर दिया। मेरे यह कहने पर कि वह भोजन स्वयं बनावें और स्वयं खा लेवें। मैं सब के अन्त में भोजन कर लूंगा। पता चला कि वे कहते हैं कि शुद्धि वालों का नाम भी भोजन करने वालों में है अतः उनका धर्म भ्रष्ट हो जावेगा। विचित्र विडम्बना थी। पर्याप्त देर तक विचारने के बाद ठाकुर लालसिंह को धर्म संकट से उबारने के लिए मैंने इस युक्ति से काम लिया कि मैं ही पांच ब्राह्मणों के स्थान में ५ बार भोजन कर लूंगा। तब उनकी चिन्ता मिटी।

प्रभु की लीला अपरम्पार

शुद्धि के कार्य में मीलों पैदल चलना पड़ता था। ब्राह्मण होने के नाते किसी के हाथ का कच्चा भोजन कर नहीं सकता था। पक्का खाना भी तो हर कोई नहीं खिला सकता था। एक बार तो भूख से तंग आकर केवल कच्चे चावल भिगो कर गुड़ के साथ खा कर क्षुधा बुझानी पड़ी परन्तु दूसरे दिन ही एक सम्पन्न परिवार ने बीसों कटोरियों में शाक तथा नाना प्रकार के पकवान तथा मिष्ठान्न मेज पर लगा कर आश्चर्य

चकित कर दिया। एक बार एक निर्धन परिवार ने रात को सोने के लिए विस्तर या चारपाई न देकर "पाल" धान के डन्ठलों से भरे कमरे की ओर संकेत कर कहा—आप आराम करें हम भी इसी में आ रहे है। रात उसी पाल में घुस कर काटनी पड़ी थी।

कढ़ी खानी महंगी पड़ी

राय साहब सुखेन्द्र सिंह जी खिमसेपुर (फरुखाबाद) में आनरेरी मजिस्ट्रेट थे। आर्य विचारधारा के सज्जन थे। मैं दो मास से पक्का खाना पकवानादि खाते-खाते ऊब गया था। मैंने राय साहब से प्रार्थना की कि किसी दिन अपने घर पर कढ़ी चावल खिला दो। उन्होंने पहले तो कानों पर हाथ लगाया। मेरे बार-बार कहने पर योजना यह बनी कि वे अपने परिवार को किसी दिन मेंके भेज देंगे। मिश्र से कढ़ी चावल पकवाकर उसकी भी छुट्टी कर देंगे। नौकर चाकरों को भी उस दिन छुट्टी दे देंगे। बस हम दोनों ताले बन्द कर अन्दर बैठकर कढ़ी चावल खाने का चोरी से कार्य कर लेंगे। ऐसा ही ड्रामा किया गया परन्तु खाने के बाद पात्र साफ करने वाली कहारन ने भण्डा फोड़ दिया कि शुद्धि वाले पण्डित जी ने राय साहब के साथ चोरी से कच्चा भोजन कढ़ी चावल खाया है। बड़ा शोर मचा बड़ी सफाइयां देनी पड़ीं तब भी बदनामी हो ही गई। मुझे वहां से वापस बुलवा लिया गया।

आराध्या देवी का रूठना

ठियोग (शिमला) में मेरे स्कूल के छात्रावास के पास देवी का मन्दिर था। मन्दिर में चबूतरे पर बच्चे नहाते तथा कपड़े धोते थे जो पुजारी को बुरा लगता था उसने लोगों से कहा कि

देवी रुष्ट हैं और यहां से चली जावेगी। मुझे प्रयत्न करना पड़ा कि देवी राजी हो जावे। उधर के लोग इकट्ठे हुए। एक पुजारी पर तिल चावल तथा जलादि छिड़ककर देवी का उन में आह्वाहन किया गया कुछ देर सिर मारने के बाद पुजारी में देवी आई और देवी से रूठने का कारण पूछा गया तो देवी ने कहा बच्चे नहाते तथा कपड़े धोते हैं। मैंने कहा अब बन्द करा देंगे चबूतरा ऊंचा कराकर सफाई करा देते हैं परन्तु देवी उधर के अपने भक्तों का नाश करने पर उतारू थी। मैं ने देवी से कहा मेरे स्कूल के बच्चे हैं मुझे दण्ड दो। देवी का उत्तर था "तुम मुझे मानते नहीं मैं तुम्हें क्या कह सकती हूं" जो मानते हैं उन्हें दण्ड दूंगी। उन लोगों से जब मैंने कहा तुम भी मनाना छोड़ दो तुम्हें देवी कुछ नही कहेगी वह उसके लिए राजी न थे अन्ततोगत्वा देवी की प्रसन्नता के लिए उपाय पूछा गया तो उसने बकरों की बलि मांगी मैंने कहा हलवा तो दे सकते हैं बकरा नहीं। हारकर देवी ने हलवा ही स्वीकार किया। ऐसा करने से मैं, मेरे विद्यार्थी तथा बाजार में दुकानदार कम से कम मुंह मीठा तो कर सके बकरे की बलि से तो पुजारियों को ही मांसाहार मिलना था।

महर्षि दयानन्द की देन—बुद्धि स्वातन्त्र्य

टीका कर्मचन्द ठियोग वाले मेरे मित्र थे। पहाड़ी ब्राह्मण इस बात से दुःखी थे। एक बार हम बैठे वार्तालाप कर रहे थे कि टीका की नजरों से मुझे गिराने के लिए एक ब्राह्मण ने रुमाल में बंधी पुस्तक लाकर मेज पर रखते हुए टीका साहब से कहा कि हैडमास्टर जी से पूछें यह क्या है। मैंने कहा रुमाल से निकालो तब पता चलेगा क्या पुस्तक है। पुस्तक खोल कर

दिखाई गई तथा पूछा गया कि अब बताओ कौन सी पुस्तक है मैंने कहा सत्यार्थप्रकाश है। पूछा गया किसकी लिखी हुई मैंने कहा महर्षि दयानन्द जी की। ब्राह्मण ने पूछा सारी पुस्तक मानते हो। मैंने कहा जहां तक वेदानुकूल है सारी मानता हूं। ब्राह्मण शोर करने लगा कि दयानन्द की पुस्तक नहीं मानते। मैंने कहा कि यही मेरे ऋषि की देन है कि बुद्धि पर ताला न लगाओ,वेद ही अपौरुषेय हैं बाकी सब ग्रन्थ वेदानुकूल होने पर हीं मान्य हैं।

नर वलि देखने की उत्सुकता

सुन रखा था कि रामपुर बुशैहर (हिमाचल) रियासतमें १२ वर्ष बाद "नर बलि" पड़ती है उसे देखने के लिए टीका कर्मचन्द जी ने निमन्त्रण दिया। उसके अनुसार हम सब "नर बलि" के स्थान पर एक दिन पहले ही पहुंचे लाखों की भीड़ थी। जिस ने नर बलि देनी थी उस परिवार में पहुंचे। कोई विशेष बात दुःख की नहीं पता चली। हां यह ज्ञात हुआ कि कुछ परिवार नियत हैं जो बारी-बारी बारह वर्ष बाद बलि पड़ने को सहर्ष तैयार रहते हैं।वर्ष भर तक उस व्यक्ति का सारा व्यय भार देवता के भण्डार से दिया जाता है जिस रस्से पर से बलि डाली जाती है वह रस्सा भी बलि पड़ने वाला स्वयं बटताहै प्रातः ९ बजे बलि पड़नी थी जहां ऊपर मन्दिर से बलि पड़नी होती है वहां नाच गाना पूजा पाठ तथा खुशियां मनाई जाती हैं। खड्ड के इस किनारे नीचे जहां उस का परिवार बैठा रोता पीटता है रस्से पर चरखड़ी बांधी जाती है बलि पड़ने वाले व्यक्ति की दोनों टांगों में रेत के थैले बांधे जाते हैं ताकि बैलेन्स ठीक रहे। पीठ पर पानी भरकर तूंबा बांधा जाता

है ताकि चरखड़ी घूमने से रस्से में आग न लग जावे। लाखों लोग ६ बजे का इन्तजार कर रहे थे रस्सा बांधा गया बांधने वालों पर ही रस्सा टूट कर गिरा। चार व्यक्ति बांधने वाले मारे गए मेरे मुंह से निकला :—

जाको राखे साईयां मार सके न कोए।

बलि पड़ने वाले व्यक्ति की बलि देवता ने इसीलिए स्वीकार नहीं की क्योंकि विघ्न पड़ गया था। वैसे रस्से पर से ऊपर से नीचे आते व्यक्ति गिर कर मर जावे तो बलि स्वीकार हो जाती है। बच जाने पर जो मुंह मांगे उसे रियासत और देवता के कोष से मिल जाता है।

शाकाहारी विदेशी अतिथि

हिमाचल में ठियोग स्कूल का मैं हैड मास्टर था। एक अमरीकन नंगे पाव, कमीज निक्कर पहने विना किसी सामान के आकर मुझे मिले और इच्छा प्रकट की कि वे मेरे अतिथि बनना चाहते हैं क्योंकि बाजार में दुकानों पर मांस पकता है और वह शाकाहारी हैं। दो तीन दिन मेरे पास रहे। संन्ध्या, नमस्ते तथा हवन आदि करने लगे। चाय, नशापान आदि नहीं करते थे। भारतीय संन्यासी महात्माओं की खोज में पैदल घूमते फिरते थे।

संकुचित् मनोवृत्ति

ठियोग स्कूल में पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के पुराने भजनोपदेशक माथुर शर्मा पधारे वे खडताल द्वारा प्रचार करते थे मेंने दो दिन प्रचार की व्यवस्था की सैकड़ों लोगों को आर्य समाज और ऋषि दयानन्द का सन्देश मिला। शिमला

आर्य समाज कालेज विभाग में सूचना पहुंची मुझ से पूछ-ताछ हुई कि गुरुकुल पारटीका प्रचार क्यों कराया गया । मैंने स्पष्ट उत्तर दिया मैंने ऋषि दयानन्द और आर्य समाज सम्बन्धी प्रचार करायाहै यदि यह अपराध है तो मेरा त्याग पत्र ले लो ।

गुडगांवां में एक समाज आर्य प्रादेशिक सभा से सम्बन्धित थी उसे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वालों ने यह कह कर सम्बन्ध तोड़ने को कहा कि कालेज पारटी मांस खाने वालों की है । मैं प्रादेशिक उप प्रतिनिधि सभा का मन्त्री था मुझसे पत्र द्वारा पूछा गया सत्य क्या है । मैंने उन्हें स्पष्ट लिख दिया कि मांस खाना वेद विरुद्ध है जो भी खाता है पापी है चाहे वह किसी पारटी का हो । रहा समाज सम्बन्धित रखने या न रखने की बात । उसमें आप स्वतन्त्र हैं जिस सभा से चाहें सम्बन्ध रखें । मेरे ऐसा पत्र लिखने पर और सच्ची बात प्रकट करने पर वह बड़े प्रसन्न हुए और समाज प्रादेशिक सभा के साथ ही सदा सम्बन्धित रही ।

हिमाचल प्रदेश में ब्राह्मण परिवारों में २००० सत्यार्थप्रकाश केवल दो दो आने देने के लिए जब मैंने अपील की तो हिन्दु सिख, ईसाई, मुसलमानों तक ने मुझे आर्थिक सहायता भेजी । आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को भी इसी सन्दर्भ में पत्र भेजा गया आर्यसमाज कालेज विभाग वालों को पता चला तो मुझे पूछा गया कि क्या गुरुकुल वालों की सत्यार्थ प्रकाश बांटोगे ? मैंने उत्तर दिया मुझे ऋषि दयानन्द का सत्यार्थ प्रकाश बांटना है जो देवेगा उससे ले लूंगा । हां यदि आप मुझे २००० पुस्तकें दे देव तो मैं किसी अन्य से क्यों मांगता फिरूंगा । तब वह सज्जन चुप हो गए ।

स्टैचू नहीं मनुष्य के विचार और गुण ही सच्ची यादगार

दिल्ली म्युनिसिपल कमेटी ने टाऊन हाल तथा रेलवे स्टेशन के बीच "महात्मा गांधी का स्टैचू" खड़ा कर जब राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद से उसका अनावरण कराया तब उन्होंने कहा था मैं हैरान हूँ कि दिल्ली म्युनिस्पैल कमेटी के लोग यह जानते हुए भी कि यहां ८०० वर्षों तक मुसलमानों का राज्य रहा उनकी हजारों यादगारें बनी परन्तु आज उनकी क्या दशा है ? दो सौ साल अंग्रेजों का राज्य रहा उनकी यादगारों का क्या हाल है ? फिर भी बापू का स्टैचू खड़ा कर याद-गार बना रहे हैं। राष्ट्रपिता महात्मा जी की सच्ची यादगार उनके उपदेश या कार्य हैं जिनके अनुसार लोगों को अपना जीवन निर्माण करना चाहिये।

सात्विकता से तामसिकता की ओर

मैं दयानन्द ब्राह्म विद्यालय से स्नातक बन कर हिमाचल प्रदेश में प्रचार के लिये भेजा गया था। आर्य समाज शिमला में पहुंचा ही था कि समाज के मन्त्री जी ने प्रश्न किया आप क्या मासिक वेतन लेंगे ? मैं स्तब्ध रह गया।

मुझे त्याग, सेवा सात्विक भावना तथा निष्काम वृत्ति से प्रचार करने की गुरुजनों से शिक्षा मिली थी। मन्त्री जी के कथन से मन पर बड़ा आघात पहुंचा। मैंने अपना बिस्तर संभाला और वापस चलने को समाज की सीढ़ियां उतरने लगा। मन्त्री जी के बहुत अनुनय और विनय करने पर मैंने कहा कि मैं तो दो समय भोजन मात्र पर सेवा करने आया हूं न कि नौकरी करने या धन कमाने की इच्छा से।

समाज के अधिकारियों ने बड़ी सराहना की और सहर्ष

मुझे स्कूल में व्यवस्था करने शिक्षा देने तथा आस पास के पहाड़ी क्षेत्र में प्रचार का कार्य सौंप दिया।

दो चार मास तो भोजन का व्यय ८) रु. मासिक दयानन्द विद्या प्रचारिणी सभा को देना पड़ा किसीको क्या आपत्ति हो सकती थी। मैं बीमार पड़ा वैद्यजी के परामर्श से मुझे २) रु० का दूध का व्यय महीने भर का देना था। सभा ने आपत्ति की। श्री डा० केदारनाथ जी प्रधान सभा ने सभी को झाड डाली और २) अतिरिक्त व्यय स्वीकृत करने के साथ २ मेरे लिए २०) मासिक आनरेरियम स्वीकृत करा दिया। मुझे सूचना मिली। मैंने आपत्ति की कि मैं २०) रुपयों का क्या करूंगा प्रधान जी ने यह कहकर सन्तुष्ट कर दिया कि ८) या १०) मासिक रोटी दूध के व्यय करके बकाया रुपये निर्धन बच्चो की सहायता में लगाता रहूं।

कुछ काल के बाद लाहौर से श्री बख्शी टेकचन्द जी का पत्र आया कि अपनी उपाधि लेने लाहौर पहुँचू। अब जाने आने के मार्ग व्यय का प्रश्न उठा मैं तो पैसों से खाली ही था। श्री प्रधान जी ने २००)रुपये देकर लाहौर भेज दिया। वापसी पर मुझे पता चला कि उन्होने सभा से २००) रुपये अपने स्वीकार करा ही लियेहैं।इसके साथ २ भविष्यके लिये आनरेरियम भी ५०) मासिक स्वीकृत करा दिया है। मुझे बड़ा कष्ट पहुंचा मैंने दुखी मन से तब कहा था कि आज मैं सात्विकता से गिरकर तामसिकता के गढ़े में फंस गया हूं।

दिल्ली में दो-दो आने आर्या

मैं जब पहली बार दिल्ली आया था तो एक दिन बाजार में चलते २ मेरे कान में ये शब्द पड़े कि 'दो दो आने आर्या' ले लो। मुझे बड़ा अचम्भा हुआ कि आर्य तो प्रभु पुत्र, श्रेष्ठ

और आस्तिक सज्जन को कहते है ऐसे सज्जन विरले ही मिलते हैं। यहां दिल्ली में दो दो आने 'इतने सस्ते आर्य कैसे मिल रहे हैं। बड़ी उत्सुकता से उस व्यक्ति को रोक कर पूछा तो उसमें खीरे की शक्ल की हरी सी वस्तु दिखा कर कहा यह आर्य कहलाते हैं और खाने के काम आते हैं मैंने अपनी अज्ञानता पर दांतों तले अंगुली दबा ली।

हिमाचल प्रदेश में भी ऐसी ही रोचक घटना घटी। डी. ए. वी.स्कूल में उधर के लोग बच्चे प्रवेश कराते डरते थे वह कहते थे कि हमारे बच्चों को आर्या हो जावेगा।

मैं बच्चों को प्रातः घर पर सन्ध्या करने के लिए चुप चाप शान्त भाव से, आंखें बन्द कर बैठने की विधि बताया करता था। एक दिन एक बच्चा घर पर सन्ध्या करने चुप चाप आंखें बन्द कर बैठ गया। उसकी माता को यह सब कुछ पता नहीं था उसने किसी काम से बच्चे को आवाज दी। जब बच्चा बोला नहीं तो माता का संशय सचमें बदल गया उसने समझा मेरे बच्चे को सचमुच आर्या हो गया है बस फिर क्या था रोती पीटती आस पड़ोस की स्त्रियों को इकट्ठा कर बच्चे को दिखा कर कहने लगी मैंने भूल की जो बच्चा डी. ए. वी. स्कूल में प्रवेश करा दिया सचमुच उसे आर्या हो गया हैं औरतों ने पानी छिड़क कर, मुंह में चम्मच डालकर जब बच्चे को तंग किया तो उसने आंख खोलकर माता से कहा कि आप मुझे ईश्वर को भी याद नही करने देतीं है मैं तो सन्ध्या कर रहा था तब जाकर सबको सन्तोष हुआ कि शुकर है बच्चे को आर्या नही हुआ। दूसरे दिन बच्चे से यह सारी घटना सुनकर उन लोगों के अज्ञान पर मुझे बड़ी हंसी आई और दुःख भी हुआ।

आर्य नाम का हौआ

प्राय: बहुत से लोगों को "आर्य" नाम के न अर्थ पता हैं न आर्य जनों की विशेषताएं या गुण ही पता हैं स्वभावतः उन्हें आर्य नाम से बड़ी चिढ़ है और वह आर्य शब्द को हौआ समझ भयभीत रहते हैं।

श्री अमीचन्द तहसील दार कोट खाई (हिमाचल) की पुत्री का विवाह था उन्होने मुझे आर्य रीति के अनुसार संस्कार कराने के लिये आमन्त्रित किया और शिमला घोडी भेज दी, मैं जब कोटखाई तहसीलदार के घर पहुंचा तो यज्ञवेदी के इर्द-गिर्द पंक्तियों में पुलिस मैंन खड़े देखे तो मुझे आश्चर्य होना स्वाभाविक था। पूछने पर पता चला कि "निमण्डं" के बड़े २ कटर पन्थी पौराणिक पंडित इस विवाह में विघ्न डालने के लिये बड़े २ लठ लिए तैयार खड़े हैं। उन्हें "आर्य विवाह" के नाम से ही चिढहै। मैंने तुरन्त युक्ति और बुद्धि चातुर्य से बड़ी सूझ-बूझ से काम लेते हुए उन ब्राह्मणों से प्रार्थना की कि मैं आर्य रीति के बदले 'वेद विधि' से विवाह कराऊंगा आप शान्ति से सारा विवाह देखें। कागज पैंसल सब को दे दी जावेगी कही भूल या कमीं पावें तो लिख लेवें विवाह की समाप्ति पर मैं आप सब के प्रश्नों के समाधान किये बिना शिमला वापस नहीं जाऊंगा। उन्होंने मेरी बात मान ली। तब मैंने तहसील दार साहब से यह कहकर पुलिस हटवा दी कि यज्ञादि शुभ संस्कारों को जो भले कृत्य हैं पुलिस की छाया में कराना ठीक नहीं। उन्होंने कहा कोई विघ्न डालेगा तो आप क्या करेंगे, मैंने कह दिया कि मैं जिम्मेवारहूं ऐसा कुछ नहीं होगा। विवाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से निर्विघ्न

सम्पन्न हो गया। एक बड़ी लम्बी सफेद दाढ़ी तथा लम्बे २ केशों वाले ब्राह्मण उठे। मैंने पूछा क्या जानना चाहते हैं ? उन्होंने कहा कि आप से क्या पूछें आप तो डर गये और आप ने आर्यों वाली कोई बात न कराकर वही कुछ किया है जो हम सब भी करते हैं। मैंने उन्हें कहा आप आर्य नाम से ही डरते रहेहैं। आज आपको ज्ञात हो गया है कि विवाह संस्कार में वर-वधू के कर्तव्यों को ही वेद मन्त्रों द्वारा कराया जाता है जो सब धर्म के अनुकूल होता है। इस संस्कार का आस पास के ग्रामों के सैंकड़ों लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

बड़ों की बड़ी बात

मैं लाहौर से जब दिल्ली आया था तो प्रातः भ्रमण करने जमना किनारे जाता था। उन दिनों श्री पं० रामचन्द्र देहलवी प्रातः निगम बोध घाट पर यज्ञ तथा उपदेश किया करते थे। मैं भी उसमें सम्मिलित होने लगा। श्री पण्डित जी प्रायः उपदेश के बाद लोगों को शंका समाधान का भी समय दिया करते थे। एक दिन पुत्र शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि नरक (बुढ़ापे तथा बीमारी आदि) से त्राण करने वाला ही पुत्र कहाता है। मैंने उनके उपदेश के बाद उन से पूछा कि क्या वैदिक वर्ण व्यवस्था में आर्य के लिये ऐसी अवस्था आ सकती है ? श्री पं० जी ने मुझ से पूछा कि मैं कहाँ से आया हूं मैंने उत्तर दिया मैं दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर से आया हूं मुझ से कहा कि मैं सदर बाजार में उनकी दुकान पर जहां वह स्वर्ण कार का काम करते थे उनसे मिलूं तब शंका निवारण करेंगे आज समय नहीं रहा दूसरे दिन मैं श्री पण्डित जी की सेवा में उनकी दुकान पर गया।

बड़े प्यार से बिठाया। हंसते २ शंका का निवारण किया॥ मुझ से मधुर स्वर में कहा कि आप प्रचार के लिये निकले हैं भिन्न २ तरह के लोगों से तुम्हारा वास्ता पड़ेगा एक गुर की सुनहरी बात बताता हूं। उन्होंने कहा यह मेरे सारे जीवन का निचोड़है। इसका जीवन में सदा घ्यान रखना सुखी,सम्मानित तथा सफल रहोगे।

श्री पण्डित जी ने कहा जब कोई सज्जन, परिबार, आर्य समाज या शिक्षणादि संस्था आपको किसी कार्य के लिये सादर आमन्त्रित करें तब सहर्ष उनके जावें और खुशी २ सारा शुभ कार्य करवा देवें। चलते समय जो कुछ वे लोग भेंट करें बिना कुछ कहे ले लेवें। इससे न कटुता बढ़ेगी न अश्रद्धा ही। घर पहुंच कर देखें कि उन्होंने जो कुछ दिया है वह समय परिश्रम तथा देश काल की स्थिति अनुसार ठीक है या नही। यदि उन्होंने जान बूझ कर कंजूसी की है तो पुनः जब कभी आप से समय मांगे तो आप उन्हें कह देवें कि मेरे पास समय नहीं है। श्री पंडित जी का यह स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य सूत्र मेरे हृदय में सदा के लिये अंकित हो गया है। मैंने कभी किसी को न निराश किया है न उनके देने का बुरा माना है या जोर जबरदस्ती की हैं। यही कारण है कि आज तक सभी का मुझे प्रेम तथा आदर प्राप्त रहा है।

सच्चाई के पथ पर

मेरे चाचा रेलवे में थे। उन्हें अपनी पत्नी के आपरेशन के लिये रेलवे से अवकाश नहीं मिल रहा था उन्होने मुझे लिखा कि आप पंजाब आवें और मिस ब्राऊन के जनाना अस्पताल लुध्याना में दो मास रह कर चाची का आपरेशन कराने में

सहयोग करें। मैंने सहर्ष सेवा करने को अनुमति देदी। उन्होंने रेलवे का सैंकन्ड क्लास का पास मुझे शिमला भेज दिया और लिखा कि पहले तो कोई पूछेगा ही नहीं परन्तु कोई पूछे तो मैं अपना नाम चाचा की जगह ले दूं और अपनी पत्नी का नाम चाची की जगह ले दूं। इस प्रकार किराये में मेरी बचत हो जावेगी रेलवे में प्रायः ऐसे चलता है।

मुझे उस पास पर उनके नामसे यात्रा करने में आत्मा तथा सच्चाई का हनन करना लगा अतःमैंने वह पास इस पत्र के साथ रजिस्ट्री द्वारा उन्हें वापस भेज दिया कि इस प्रकार रेलवे से विश्वास घात होगा और हो सकता है कि आपकी नौकरी भी जाती रहे अतः मैं अपने कुछ रुपये बचाने के लिये यह सब करने को तैयार नहीं, चाचा जी ने मेरे ऐसा करने की भूरि भूरि प्रशंसा की और अपनी भूल स्वीकार की।

मेरा एकमात्र जयघोष

मानव समाज का सबसे बड़ा धन बच्चों का पवित्र जीवन है। बच्चे ही राष्ट्र व समाज के भावी आधार स्तम्भ हैं। देश व जाति का भविष्य उसके बच्चों के उज्जवल चरित्र, पवित्र विचारों तथा दूरदर्शिता पूर्ण कार्यों पर ही निर्भर होता है अतः उन्हें सुशिक्षित, सदाचारी, बलिष्ठ, उच्च विचारवान तथा नैतिक शक्ति से सम्पन्न बनाना राष्ट्र व समाज की ही सच्ची सेवा है। यही कारण है कि हमारे पूर्वज "जनया दैव्यं जनः" वेद की इस सूक्ति के अनुसार प्रारम्भ से ही संस्कारों द्वारा बच्चों को संयमी, सदाचारी, धार्मिक तथा दिव्य जीवन वाला बनाने में प्रयत्नशील रहते थे।

दुर्भाग्यवश आज हमारे अधिकांश देशवासी सन्तान को

जन्म देने मात्र में ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ उनकी ओर से सदा उदासीन रहते हैं। परिणाम स्वरूप हमारे बच्चे अपनी संस्कृति, सभ्यता और धर्म से विमुख हो चुके हैं। न उन्हें माता-पिता और बड़ों में श्रद्धा है और न गुरुजनों में भक्ति, न उन्हें ईश्वर से प्रेम है और न वेदादि शास्त्रों में विश्वास है। जिन्हें सत्य, ईश्वर और धर्म में प्रेम नहीं सिखाया जायगा वे सत्यव्रती ईश्वरवादी और धर्मात्मा कैसे बन सकते हैं। आज की शिक्षा प्रणाली हमारे बच्चों को निपुण निर्मल, मेधावी, बुद्धिमान, धार्मिक तथा दिव्य नहीं बनाती प्रत्युत उन्हें निकम्मा, आलसी, परावलम्बी, उच्छृङ्खल, दास तथा निस्तेज बना रही है।

आजकल बच्चों को प्रिय हैं चटपटे खाद्य पदार्थ, भड़कीले वस्त्र, अश्लील और उत्तेजक गन्दा साहित्य, नये सिनेमा के चित्र तथा कामुकता पूर्ण भद्दे और गन्दे गीत जिन्हें वे जहां-तहां गुनगुनाते फिरते हैं। इतना ही नहीं, माता-पिता तथा आचार्यों की देखभाल के अभाव में वे आज ऊपर से आकर्षक पर अन्दर से विषाक्त राष्ट्रघातक समाज विरोधी तथा अधार्मिक विदेशी विचारधाराओं के भी शिकार हो रहे हैं। पाश्चात्य शिक्षा व सभ्यता तथा अश्लील सिनेमाओं के विषमय कुप्रभाव से देश के बच्चे-बच्चियों का जितना घोर अधःपतन हो रहा है यह किसी से छिपा नहीं।

ऐसी अवस्था में मेरा सभी से बार २ आग्रह है कि अपने बच्चों की सुध लो। इनका सुधार तभी सम्भव है जब उनके जीवनों को यथार्थ उच्च स्तर पर ले जाने के लिये प्रारम्भ से अर्थात् बाल्यकालसे ही प्रयत्न किये जावेंगे। बच्चों की शिक्षा दीक्षा तथा लालन-पालन आदि की व्यवस्था विधिवत प्राचीन

पुरखों के ढंग से, शास्त्रीय आधार पर हो। बच्चों को शिक्षित ईश्वर भक्त, शूरवीर, साहसी, सदाचारी, संयमी, अनुशासित धार्मिक तथा सशक्त बनाने के लिये तथा उनकी सुषुप्त शक्तियों को जागृत करने के लिए उन्हें सदा व्यस्त रखा जावे, उन्हें कुमार सभाओं, युवक समाजों, वीर दलों आदि संगठनों में सक्रिय भाग लेने के लिए भेजा जावे। बच्चों की होने वाली भिन्न २ प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए उन्हें सदा प्रेरित किया जाया करे जिससे जहां वे पारितोषिक, प्रमाण पत्रादि द्वारा उत्साहित होंगे वहाँ उनके भीतर की झिझक तथा हीन भावना भी दूर होगी। उनकी वाक्शक्ति विकसित होगी, प्रतिभा बढ़ेगी तथा भावी जीवन में सामाजिक तथा राष्ट्रीय संगठनों को चलाने का शिक्षण भी उन्हें मिल सकेगा। सत्साहित्य मनुष्य का सच्चा साथी और सबसे बड़ा परन्तु मूक पथ-प्रदर्शक होता है। अतः अपने बच्चों को धार्मिक तथा जीवनोपयोगी वैदिक सत्साहित्य पढ़ने की प्रेरणा देवें। धार्मिक-ग्रन्थों की परीक्षाओं में बिठाने से इस बहाने उनका स्वाध्याय स्वतः ही हो जायेगा। अतः इस दिशा में उनके सामने अपना आदर्श उपस्थित कर उन्हें सदा प्रोत्साहित अवश्य करते रहें।

आज जो स्थिति है उसमें बच्चों का दोष नहीं। सच्चाई तो यह है कि वे जैसा देखते है वैसा ही बनते हैं अतः हमें अपने उदाहरण से उन्हें अच्छे सस्कार देने चाहियें। यदि हम विश्व में सच्ची शान्ति स्थापित करना और युद्ध के विरुद्ध दिल से संघर्ष करना चाहते हैं तो यह शुभ कार्य बच्चों से ही शुरू करें। यदि बच्चों का बाल सुलभ भोलापन बना रहेगा तो स्वतः ही लड़ाई-झगड़े नहीं होंगे। सत्य के लिये स्नेह आवश्यक है और 'सच्चा स्नेह' बच्चों से ही सीखा जा सकता है। बच्चों की

सरलता, निष्कपटता तथा गुण-ग्राहकता सदा ग्राह्य होती है।

बच्चों का आचरण माता-पिता तथा गुरुजनों से ही बनता है। अतः अभिभावकों को बच्चों का यथायोग्य पालन करने के साथ २ उनके चरित्र-निर्माण करने की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये तथा उन्हें अच्छी शिक्षा दिलाकर विद्वान् बना उन्हें आत्म-निर्भर अवश्य बनाना चाहिये जिससे वे सदा धर्म-परायण व पुरुषार्थ प्रिय बनकर सदा ईमानदारी से अपना जीवन सफल, सुखी व सम्मानित कर सकें। माता-पिता तथा गुरुजनों को अपनी सन्तानों के लिए धन. मकान तथा उनके विवाह की ही चिन्ता में नहीं घुलते रहना चाहिये बल्कि अपनी संतानों को सपूत तथा सद्गुणी बनाना चाहिये जिससे वे सभी कुछ प्राप्तकर लेंगे। यदि बच्चे कुपुत्र रहेंगे तो माता-पिता का दिया सभी कुछ गंवा बैठेंगे और जीवन में अपयश व अपकीर्ति के भागी तथा माता पिता के लिए कलंक सिद्ध होंगे।

अब मैं ७३ वर्ष से ऊपर का हूं। जब तक स्वस्थ तथा जीवित हूं मैंने तो इस दिशा में प्रयत्न करते चलना है, प्रयत्न करते ही जीना व प्रयत्न करते ही मरना है और सदा, सब जगह सब अवस्थाओं में मैंने माता-पिता तथा गुरुजनों से यही प्रार्थना और आग्रह करना है कि अपने समाज व राष्ट्र के भावी उत्तराधिकारी "बच्चों की सुध लो" और उनके रहन-सहन, खान-पान, शिक्षा-दीक्षा और विकास के कार्यों में सदा पूरा-पूरा ध्यान दें जिससे वे जहां आपकी सम्पत्ति के सच्चे उत्तराधिकारी बनें वहां आपके उच्च विचारों व आदर्शों के भी सच्चे रक्षक बनें। यही मेरा एकमात्र जयघोष है।

—देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक

उपसंहार

श्री धर्म्मेन्दु जी स्वनिर्मित व्यक्ति हैं एमर्सन के शब्दों में उपदेशक का मूल्यांकन इस बात से नहीं होता कि वह क्या कहते हैं अपितु इस बात से होता है कि वह क्या नहीं कहते। इसका अभिप्राय यह है कि उनका मूल्यांकन उनके चरित्र से होता है। एक धर्मयाजक ने ऐसे उपदेशक की चर्चा की थी जो बहुत अच्छा उपदेश देते थे परन्तु उनका जीवन बड़ा घृणित था। जब वे वेदि से बाहर होते थे तब लोग यह चाहते थे कि वे कभी भी वेदि पर न बैठें और जब वे वेदि पर बैठते थे तो लोगों की इच्छा रहती थी कि वे वेदि से कभी न उतरें। उपदेशक की सबसे बड़ी विशेषता और योग्यता उसके आचार-विचार की पवित्रता होती है जो उसके मौखिक और लिखित उपदेश से कहीं अधिक प्रभावशाली उपदेश करती है। प्रचारक का जीवन सच्चा, खरा और सरल होना चाहिए। जिसका स्नेह महान् हो, जो ज्ञान और कर्म में भव्य हो, जिसका कार्य-कलाप विशद हो, जिसकी सादगी और सज्जनता भी उच्च कोटि की हों वही सच्चा उपदेशक होता है। इस कसौटी पर हमारे जो उपदेशक एवं प्रचारक खरे उतरे हैं या खरे उतर रहे हैं उनमें श्री धर्मेन्दु जी को स्पृणीय स्थान प्राप्त है।

एक बार प्रिंसिपल शेषाद्रि ने जिनका भारत के शिक्षा जगत् में ऊंचा स्थान था आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की प्रशंसा में लिखा था: – 'मैंने अनेक नगरों में आर्यजनों को मानव समाज के उत्थान के कार्यों में निरत पाया। स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज के सदस्यों के लिए संसार का उपकार करना आवश्यक ठहराया। एक पाश्चात्य धर्म याजक ने विना किसी झिझक के लोगों को यह शिक्षा दी कि प्राणी मात्र की सेवा ही ईश्वर की पूजा है और जब तक आर्यसमाज के सदस्य मानव समाज की

सेवा के आश्चर्यजनक उदाहरण प्रस्तुत करते रहेंगे जैसा कि वे प्रस्तुत करते रहे हैं तब तक वे संसार के मत मतान्तर के लोगों के मध्य शिर ऊंचा करके विचरते रहेंगे। इतना ही नहीं वे अनुकरणीय उदाहरण भी प्रस्तुत करते रहेंगे।

यदि परलोक में हमें कहा गया कि पृथ्वी तल पर अपने निवास के काल में तुमने जो कुछ किया है उसका हिसाब प्रस्तुत करो तो परलोक में विश्वास करने वाले हम लोग क्या विवरण प्रस्तुत करेंगे यह सोचकर मुझे कभी-कभी बड़ा आश्चर्य होता है। हममें से बहुत से संभवतः यह कह देंगे कि हमारा ध्यान अपनी पत्नियों और बाल-बच्चों के कल्याण पर केन्द्रित रहा। हमने ईमानदारी से धन कमाया और अपने प्रिय जनों का हित किया। इस अवसर पर वे लोग अपने रिकार्ड पर गर्व अनुभव करेंगे जिन्होंने निष्काम भाव से पर-हित कार्य किया। जिन्होंने पर हित न करते हुए भी पर अनु-पकार नहीं किया, जिन्होंने पीड़ितों की सेवा सहायता की होगी और गिरे हुओं को ऊपर उठाया होगा। यदि आर्य-समाज के सदस्यों से इस प्रकार का रिकार्ड मांगा गया तो निश्चय ही वे बहुत बढ़िया रिकार्ड प्रस्तुत कर सकेंगे।"

श्री धर्मेन्दु जी ने अपनी पत्नी श्रीमती जावित्री देवी के साथ सेवा का जो रिकार्ड बनाया है और बना रहे हैं उसके परिपेक्ष्य में विना किसी झिझक के यह कहा जा सकता है कि उनकी भी वैदिक धर्म और आर्यसमाज की सेवा एव परहित के कार्य का बढ़िया रिकार्ड प्रस्तुत करने वाले आर्यों में गिनती होगी और यह रिकार्ड उस स्मारक का रूप लिए होगा जिसे समय के थपेड़े मिटा न सकेंगे।

६७ मोहन पार्क, शाहदरा —रघुनाथप्रसाद पाठक
दिल्ली-३२, १३-४-१९७७

परिशिष्ट—

विशिष्ट व्यक्तियों की दृष्टि में

पं० देवव्रत धर्मेन्दु दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर के स्नातक हैं और ठियोग तथा पच्छाद (नाहन) (हिमाचल) में डी. ए. वी. स्कूलों के सुयोग्य हैड मास्टर रह चुके हैं। इनके उत्साह और कार्य करने की क्षमता की श्री महात्मा हंसराजजी तथा आर्यसमाज शिमला के अधिकारियों द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है।

—आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री
एम. ए. एम. ओ. एल.

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु दिल्ली के आर्य नवयुवकों में एक विशेष स्थान रखते हैं। अध्यापन और व्याख्यानों के अतिरिक्त आर्य कुमार सभाओं के संगठन का कार्य करते हुए आप नवयुवकों के जीवन निर्माण में विशेष रुचि रखते हैं।

—सुधाकर एम. ए.

आर्य जगत् के धुरन्धर उपदेशक और हैदराबाद सत्याग्रह समिति के यशस्वी मन्त्री श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु ने अपना सारा समय सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यों में लगा दिया है।

हिन्दी जगत् और आर्यसमाज में छोटा बड़ा कौन उन्हें नहीं जानता? धार्मिक जगत्, शिक्षा क्षेत्र और सामाजिक जीवन में उनकी उपलब्धियां अनेक और विशेष हैं। अब वह अपना पूरा समय इन्हीं कामों में लगायेंगे।

हिन्दी प्रचार, धर्म शिक्षा और सदाचार परीक्षा के क्षेत्र में धर्मेन्दु जी की अमूल्य सेवाओं के लिए आर्यसमाज चिर ऋणी रहेगा। राजधानी की समाज सेवी संस्थाओं को उनकी आयोजन एवं व्यवस्था शक्ति का पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहिए।

—रामचन्द्र शर्मा 'महारथी'

श्री धर्मेन्दु जी में नम्रता, सत्य, प्रेम, सज्जनता, उदारता, निर्भीकता तथा सब के साथ प्रेम, आदर तथा सहानुभूति से व्यवहार करने के ऐसे मधुर गुण हैं जिनकी सुगन्धि सभी दिशाओं में फैल कर लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती रहती है।

—डा० श्यामसिंह शशि,
एम. ए. पी. एच. डी.

श्री पं०देवव्रतजी धर्मेन्दु की विद्वत्ता, प्रचार, लगन, उत्साह, परिश्रम, कार्य क्षमता, सोच विचार और सूझ बूझ वस्तुतः बड़ी प्रशंसनीय है।

—प्रिन्सीपल हरिश्चन्द्र एम. ए.

आपकी प्रचार व कार्यशैली अत्यन्त स्तुत्य एवं अनुकरणीय है। उसे देख व अनुभव कर यही मुंह से निकलता है कि काश ! आर्यसमाज के प्रचारक आप जैसे होते।

—जनार्दन आर्य 'भिक्षु'

यह प्रमाणित करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि पं० देवव्रत धर्मेन्दु ने डी. ए. वी. मिडिल स्कूल ठियोग (शिमला) और दयानन्द अमर प्रकाश मिडिल स्कूल पच्छाद (नाहन स्टेट) में करीब ६ वर्ष तक हैड मास्टर के रूप में काम किया। इस अवधि में इन्होंने अपने कर्त्तव्यों का पालन बहुत विश्वास पात्रता, निष्ठा एवं ईमानदारी से किया। आर्यसमाज के कार्यों में ये हमेशा दत्तचित्त रहते रहे हैं। इनका आचरण प्रशंसनीय है।

आपने अपनी विद्वता एवं योग्यता से छात्रों को उचित शिक्षा के स्तर तक पहुंचा दिया और स्कूल की उन्नति के लिये भी आपने पूर्ण योग्यता से अपने कर्त्तव्य का पालन

किया। इसके अतिरिक्त आपने छात्रों में धार्मिक वृत्ति जगाने के लिये भी शानदार काम किया। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इन्होंने पिछड़े पहाड़ी क्षेत्रों में धर्मका प्रसार व प्रचार किया जो सर्वथा स्तुत्य है। यह पूर्ण निःस्वार्थ सेवा भावना से कार्य करते हैं। आप ऋषि तुल्य गुणों से युक्त हैं। स्कूलों में इनका आचरण, सामाजिक सेवा और कार्य आलोचना रहित रहा है। सभा के सदस्य इनसे हमेशा सन्तुष्ट रहे हैं। हमारी प्रबल इच्छा है कि आप अपनी निःस्वार्थ सेवा भावना के कारण अपने जीवन में पूर्ण यश एवं समृद्धि अर्जित करें।

—रत्नचन्द वकील तथा हरनारायणसिंह
मन्त्री, दयानन्द विद्या प्रचारिणी सभा, शिमला

श्री पं. धर्मेन्दु जी जैसे निष्पक्ष, विचारशील एवं विद्वान् महानुभाव को अपने मध्य पाकर अपार हर्ष हो रहाहै। आपके अब तक के जीवन के अनुभव से हम जान सके हैं कि आपके हृदय में आर्य समाज के ही नहीं, अपितु समस्त हिन्दू समाज के संगठन के प्रति तड़प और अटूट लगन है।

आर्य समाज शकूरबस्ती में दो पक्षों में गत दो वर्षों से जो विवाद चल रहा था उसे आपने योग्यता, निष्पक्षता, निपुणता, न्यायकुशलता और विद्वता से सुलझाया। इसके लिए समस्त नवनिर्वाचित पदाधिकारी एवं सदस्य आपके अति आभारी हैं। आपकी अध्यक्षता में ही नवनिर्वाचन का यह कठिन कार्य सम्पन्न हुआ उसके लिए भी हम आपके कृतज्ञ हैं।

—ज्वालाप्रसाद गुप्त प्रधान एवं रामसिंह शर्मा मन्त्री
आर्यसमाज शकूरबस्ती दिल्ली,

श्री पं. देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक प्रधान आर्य युवक परि-षद जिस निष्काम भाव और सुचारु रूप से युवकों में आर्य

समाज को प्रिय बनाने तथा सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार व प्रसार का काम कर रहे हैं उसके लिए वे आर्य जगत की बधाई के पात्र हैं।

—बाल मुकन्द आर्य,
फरीदाबाद

ऋषि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने मनुष्य को संस्कृत बनाने के लिये बालकों के संस्कारों पर विशेष बल दिया है। परन्तु उस ओर माता-पिता और गुरुजनों ने ध्यान नहीं दिया। परिणामस्वरूप अब आर्य समाज के क्षेत्र में युवकों का प्रायः अभाव है।

परन्तु मैं पं. देवव्रत जी धर्मेन्दु को धन्यवाद देता हूं कि एक व्यक्ति वह कार्य कर रहा है जिससे कुमार एवं युवकों को कुछ प्रोत्साहन मिला।

पहले आपने कुमार सभाओं के माध्यम से बालक-बालिकाओं में धर्म के प्रति आस्था पैदा की। वे बालक जब युवा हुए तो फिर आपने आर्य युवक परिषद का निर्माण करके उसके द्वारा सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षाओं का आयोजन किया। इस योजना से सहस्रों युवक-युवतियों ने सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करके परीक्षाएं दीं और अपने जीवन को उच्च आचार-विचार से पवित्र बनाया।

वास्तव में पण्डित धर्मेन्दु जी अभिभावकों, समाजों संस्थाओं, और सभाओं के करने वाले काय को करके उनके लिये भी प्रेरणा स्रोत बने हैं।

आर्य जनों से मेरा सानुरोध निवेदन है कि इनके द्वारा आयोजित योजनाओं में अधिक से अधिक सहयोग दें। इसमें आपके बालकों, युवकों का भला है और उनके भले में आपका भला है।

—देशराज चौधरी
भूतपूर्व उपमहापौर दिल्ली नगर निगम

अंगुलियों पर गिने जाने वाले व्यक्ति ही ऐसे होते हैं जो दूसरों के बालक-बालिकाओं को शिष्ट, सदाचारी और धार्मिक बनाने क. यत्न करें। श्री पं. देवव्रत धर्मेन्दु जी में यह भावना मैं ५० वर्षों से निरन्तर देख रहा हूं। वैसे तो आर्य सामाजिक परिवारों से आपका किसी न किसी रूप में सम्पर्क रहा ही है। पहले आपका कार्यक्षेत्र कुमार सभाओं द्वारा बालकों में सद्वृत्ति बनाने का रहा। फिर युवकों के लिये भी आपने युवक परिषद् द्वारा अनेक योजनाओं को प्रारम्भ कर मार्गदर्शन किया।

मैं तो निश्चय पूर्वक कहता हूं कि आर्य परिवार और आर्य समाजें तथा आर्य प्रतिनिधि सभाएं श्री पंडित जी के आभारी हैं कि जो अपना सारा जीवन हमारे कुमारों और युवकों में धार्मिक प्रवृत्ति की जागृति के लिये व्यतीत कर रहे हैं। जो थोड़े बहुत कुमार और युवक हैं वह पण्डित जी द्वारा ही दीक्षित हैं।

मैं पण्डित जी और उनके द्वारा संस्थापित महत्वपूर्ण आर्य युवक परिषद का धन्यवाद करता हूं।

—वयोवृद्ध आर्यनेता श्री मा० शिवचरणदास जी
दरियागंज दिल्ली

व्यक्ति एक--संस्था अनेक

१३ अप्रैल, १९०४ को वैशाखी के दिन जनमे, श्री देवव्रत धर्मेन्दु का स्थान राजधानी के सामाजिक, धार्मिक तथा सार्वजनिक कार्य कर्ताओं में महत्वपूर्ण है। ७३ वर्ष की आयु को पार करके भी वे जिस प्रकार नियमित रूप से अपने दैनिक कार्यों को सञ्चालित करते हैं, उसे देखकर नवयुवकों को भी स्पर्धा होती है। उनमें उत्साह, दृढ़ता, करुणा, मानवता तथा आत्म-विश्वास की भावनाएं कूट-कूट कर भरी हैं। बच्चों

तथा नवयुवकों के लिये उनके हृदय में अगाध ममता और स्नेह की भावना है। एक शिक्षक तथा प्रचारक के रूप में अपने सार्वजनिक जीवन के पचास वर्ष पार करके वे यद्यपि अध्यापन कार्य से अवकाश प्राप्त कर चुके हैं, फिर भी उनकी गतिविधियां और भी अधिक व्यापक हो गई हैं। अब भी उन पर न जाने कितनी सामाजिक तथा शैक्षणिक संस्थाओं का कार्य-भार है। युवक परिषद् दिल्ली के संस्थापक-अध्यक्ष हैं। वे केवल दान इकट्ठा ही नहीं करते, अपितु स्वयं देते भी हैं। देने वाला कभी घाटे में नहीं रहता। उसे भगवान और भी देता है जिससे प्रवाह और भी गतिशीलहो। वे केवल अर्थ-दान ही नहीं करते, अपितु शिक्षा-दान और सेवा-दान भी करते हैं।

इन सब कार्यों के अतिरिक्त उन की सब से बड़ी विशेषता यह है कि वे मित्रों के मित्र, सहृदय मानव, एक सफल व्याख्याता तथा मधुर भाषी हैं। आप सदैव आय कुमारों तथा आर्य युवकों के लिये उत्साह के स्रोत रहे हैं। उनके चरित्र निर्माण की दिशा में वे सदैव अग्रणी हैं। कोई भी अच्छा कार्य हो आप धर्मेन्दु जी को कभी कहीं भी पीछे नहीं पायेंगे।

—श्री रामकृष्ण भारती
पंजाबी बाग नई दिल्ली

युग-युग धर्मोज्ज्वल

भारत भूमि के आर्य जाति के सुन्दर सेवक।
आर्य्य धर्म के, पुण्य कर्म के उज्ज्वल प्रेरक॥
सत्याग्रही, यशस्वी, विजयी, नित कर्मोज्ज्वल।
देवव्रत धर्मेन्दु बनो युग-युग धर्मोज्ज्वल॥

—कुमारी निर्मला माथुर

आदर्श समाज सेवी श्री देवव्रत धर्मेन्दु

—श्री तफहचन्द शर्मा "आराधक"

पिछले २५-३० वर्ष से राजधानी में एक समाज-सेवी को निकट से विभिन्न क्षेत्रों में सेवा करते देखता आ रहा हूं और वे समाज-सेवी हैं श्री देवव्रत धर्मेन्दु, जो दिल्ली में आने के समय से लेकर अब तक अनेक आन्दोलनों में जी-जान से लगे रहे हैं। उन जैसा कर्मठ व्यक्ति होना कठिन है जो इस अवस्था में भी रात को रात और दिन को दिन न गिनकर निरन्तर अपना जीवन समाज-सेवा के कार्यों में लगा रहे हैं।

श्री देवव्रत धर्मेन्दु डी० ए० वी० कालिज लाहौर से सम्बद्ध श्री दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के यशस्वी स्नातक हैं इस आदर्श शिक्षण संस्था से शिक्षा पाकर आप बहुत वर्ष तक हिमाचल प्रदेश में शिक्षा और समाज सेवा के क्षेत्र में सराहनीय काम करते रहे हैं।

श्री धर्मेन्दु उन निर्भय समाज सेवकों में से हैं जिन्होंने बहुत वर्ष पहले हिमाचल और उसके आस-पास के क्षेत्रों में पर्वतीय क्षेत्र-की स्त्रियों को बेचने से रोकने का आन्दोलन चलाया। उन्होंने सैंकड़ों स्त्रियों को कुख्यात व्यक्तियों के चंगुल से छुड़ा-कर उनके अभिभावकों तक पहुंचाया। इस सम्बन्ध में यह कहना अनुचित न होगा कि आज भी उन पर जो समाज-सेवा की भावना का प्रभाव है उससे उनका प्रारम्भिक जीवन सम्मि-लित है। स्त्रियों को कुख्यात व्यक्तियों के चंगुल से छुड़ाना और उन्हें बेचने से रोकना आदि काम ही केवल उन्होंने नहीं किये हैं बल्कि वे समाज सेवक के रूप में जब पहली बार दिल्ली आये उस समय वे एक पुण्यात्मा के कहने पर हरिजनों का उत्थान करने के लिये दिल्ली आये थे। वे पुण्यात्मा, जिन्होंने

श्री धर्मेन्दु जी को हरिजनों की सेवा का भार सौंपा था, थे पंजाब केशरी लाला लाजपतराय। जिस समय श्रमजीवी आश्रम दिल्ली का संचालन करने के लिये श्री धर्मेन्दु दिल्ली आये थे उस समय एक नवयुवक के रूप में उन्होंने समाज सेवा की भावना से दिल्ली में जो काम किया उसे भुलाना कठिन है।

अनेक बार समाज सेवा के मार्ग में उनके सामने भारी संकट भी आये हैं। बहुत पहले की बात है कि उत्तर प्रदेश के एक नवाब का भाई हरिजनों का धर्म-परिवर्तन करने के लिये प्रयत्नशील था। धर्मेन्दु के कान में जब उस नवाब के भाई के इस विचार की भनक पड़ी तो ये सब सुख छोड़कर उस स्थान पर जा पहुंचे और उन्होंने अपने नाम के अनुरूप बहुत व्यक्तियों को धर्म-परिवर्तन करने से बचा लिया।

दिल्ली में समाज सेवा के साथ साथ एक यशस्वी धर्म-प्रचारक के रूप में वे नयी दिल्ली के डी० ए० वी० हायर सैकेण्ड्री स्कूल में शिक्षा के माध्यम से धर्म का प्रचार करते रहे और अब इस शिक्षण संस्था से अवकाश प्राप्त करने पर भी उनकी बहुमुखी सेवा विभिन्न रूप में राजधानी के नागरिकों को प्राप्त हो रही है।

श्री धर्मेन्दु ने युवकों के उत्थान की दिशा में भी सराहनीय काम किया है। उनका वह कार्य अबाध गति से अब भी जारी है। अब भी वे युवकों में वाद-विवाद तथा निबन्ध प्रतियोगिताएं चलाकर उत्साह का संचार कर रहे हैं। आर्यसमाज की विचार धाराओं से प्रभावित होने के कारण स्वभावतः उनका लगाव आर्य समाज तथा आर्य समाज से सम्बन्धित संस्थाओं के साथ है और उन्होंने अखिल भारतीय आर्य कुमार परिषद्
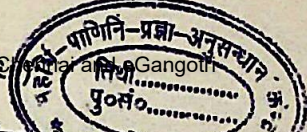
की परीक्षाओं का भी संचालन किया है। अनेक आर्य कुमार सभाओं को स्थापित भी किया है। उनके इस प्रयत्न से हजारों युवक सही मार्ग पाकर जीवन सफल बना सके है।

हिन्दी के प्रचार में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हिन्दी प्रचारिणी सभा तथा अखण्ड भारत सम्मेलन आदि के आन्दोलनों में आप का विशेष सहयोग रहा है और आप इन सब संस्थाओं के सम्मानित पदाधिकारी भी रहे हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में, उन्होंने दैनिक यज्ञ प्रकाश, वेद सन्देश, वैदिक सूक्ति सुधा, महर्षि दयानन्द वचनामृत आदि पुस्तकें लिखीं तथा उनके निरन्तर प्रचार करने के लिये धर्मेन्दु प्रकाशन निधि के लिये सार्वदेशिक सभा को ५ हजार रुपये की धनराशि प्रदान की। श्री धर्मेन्दु ने ११०० रुपये आर्य कुमार सभा नयी दिल्शी को भवन-निर्माण के लिये भी दिये हैं।

युवकों में समाज सेवा की भावना भरने के लिये उन्होंने आर्य युवक परिषद् की स्थापना की है। यह संस्था श्री धर्मेन्दु जी के प्रयत्न से दिन रात उन्नति कर रही है। इसे भी १०००) नकद पण्डित जी ने तथा उनकी धर्मपत्नी ने ५०००) दिये है।

श्री धर्मेन्दु कुशल लेखक और यशस्वी वक्ता हैं। उनका समय-समय पर राजधानी तथा राजधानी से बाहर की संस्थाओं को सहयोग मिलता रहता है।

इन दिनों आप सार्वदेशिक प्रकाशन लि० के डायरेक्टर तथा सार्वदेशिक प्रेस क अवैतनिक प्रबन्धक भी हैं।

इस प्रकार के कर्मठ समाज सेवी श्री धर्मेन्दु को पिछले २५-३० वर्षों से जिस उत्साह के साथ सेवा करते हुए देख रहा

हूं उससे उनके प्रति मेरी भारी निष्ठा है और मैं चाहता हूं कि श्री धर्मेन्दु जी की सेवाओं से हम आगे बहुत वर्षों तक लाभ उठाते रहें।

धुन के धनी धर्मेन्दु जी

—श्री जयवंशी झा एम. ए.

साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यों में निरन्तर उलझे हुए श्री धर्मेन्दु जी दरियागंज के कूचा दखिनी राय में एक साधक का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जिस प्रकार साधक के समक्ष इष्टसिद्धि ही एक मात्र लक्ष्य होता है उसी तरह धर्मेन्दु जी ने भारतीय समाज, साहित्य, धर्म तथा संस्कृति के अभ्युत्थान को ही अपना एकमात्र उद्देश्य बना लिया है।

श्री देवव्रत धर्मेन्दु जी से मेरा प्रथम परिचय दरियागंज हिन्दी साहित्य मण्डल के सिलसिले में १९४८ ई० में हुआ जो परिचय धीरे-धीरे घनिष्ठतर से घनिष्ठतम होता गया। प्रारम्भ में जो उनका एक अग्रज का स्नेह मुझे प्राप्त हुआ वह आज भी कुछ विशेष रूप में ही उपलब्ध है। आज २५ वर्ष बाद भी उनकी सरलता, सुजनता, कृपालुता, सहिष्णुता और शालीनता में रत्ती भर भी अन्तर नहीं आया है!

धर्मेन्दु जी का जीवनक्रम विलक्षण और प्रवृत्ति बहुमुखी है। बाल्यावस्था से ही आप में भारतीय सस्कृति, धर्म और समाज के प्रति 'कुछ करने' की छटपटाहट रही है। शैशव में ही माता-पिता एव अन्य निकट सम्बन्धियों की छत्रच्छाया आप पर से उठ गयी। इसी कारण आप पारिवारिक जीवन के
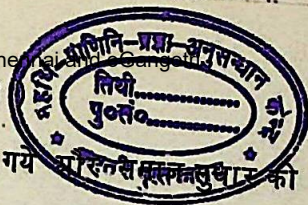
प्रति वीतराग एवं निस्पृह हो गये और समाज-सुधार की ओर प्रवृत्त हो गये।

आपने अपने अद्यावधि जीवनकाल में सैकड़ों हिन्दू-ललनाओं का म्लेच्छों के चंगुल से उद्धार किया है, हजारों हिन्दुओं का ईसाई व मुसलमान होने से बचाया है और उतनी ही संख्या में हिन्दू धर्म से अलग हुए लोगों को फिर हिन्दू धर्म में प्रतिष्ट कराया है। यह कार्य आपने अहर्निश तन, मन, धन लगाकर किया है। आपकी इस अटूट लगन और उत्साह की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है।

श्री धर्मेन्दु जी ने हिन्दुओं की रक्षार्थ हिमाचल प्रदेश और रामपुर (उत्तर प्रदेश) में तथा दिल्ली में हरिजन भाइयों को हिन्दू समाज में उचित स्थान दिलाने के लिए जो काम किये उसके लिए हिन्दू समाज चिरकाल तक उनका ऋणी रहेगा।

शिक्षा के क्षेत्र में भी आपका प्रयास अनुकरणीय है। आपने वर्षों तक नई दिल्ली के डी. ए. वी. हायर सेकेण्डरी स्कूल में धर्माध्यापन किया। इस अवधि में आपने हजारों शिष्यों का निर्माण किया। आज भी देश के कोने-कोने में धर्मेन्दु जी का शिष्य समुदाय इनका गुणगान कर रहा है। भारतीयता से ओत-प्रोत करने के लिए आपने आर्यकुमार सभा आर्यकुमार परिषद् तथा आर्य्युवक परिषद् की स्थापना की। इनके द्वारा संचालित परीक्षाओं से लाभ उठाकर हजारों युवकों का जीवन सफल हो गया है। इतना ही नहीं, छात्रों में शिक्षा की भावना जागृत करने के लिए आप प्रतिवर्ष सैकड़ों रुपये अपनी ओर से छात्रों में वितरित करते हैं।

इस प्रकार श्री धर्मेन्दु जी एक कुशल लेखक, प्रखर वक्ता, लगनशील धर्मोपदेशक और आदर्श समाज-सुधारक हैं। सही

अर्थ में आप स्वामी दयानन्द के अनुयायी और आर्यसमाज के प्रबल साधक हैं।

इस समय आप ७३ वसन्त देख चुके हैं फिर भी आप में युवकोचित लगन और उत्साह बना हुआ है। आलस्य आप में लेशमात्र भी नहीं है। आपने अपना शेष जीवन धर्मप्रचार, समाज सुधार और शिक्षा-प्रसार में लगा दिया है। प्रातः से सायं तक आप इन्हीं कामों में जुटे रहते हैं।

वस्तुतः आप निरभिमानिता, सौजन्य और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति हैं, यही कारण है कि आप सतत मित्रों और प्रशंसकों से घिरे रहते हैं। आपका जीवन बच्चों और बूढ़ों, छात्रों एवं विद्वानों के लिए सर्वथा अनुकरणीय है। अभी पर्याप्त समय तक हिन्दू समाज को आप जैसे कर्मठ व्यक्ति की आवश्यकता है।

धर्मेन्दु जी का अनुकरणीय जीवन

—श्री प्रो० शम्भुदयाल शर्मा एम. काम

पण्डित जी डी. ए. वी स्कूल में मेरे अध्यापक रहे हैं। एक बार मैं उनसे धार्मिक परीक्षा के विषय में उनके घर मिलने गया। उनके मिलनसार, त्यागमय एवं संयमशील जीवन से इतना प्रभावित हुआ कि उनके व्यक्तित्व की छाप सदैव के लिए मेरे हृदय पटल पर अंकित हो गई। उनकी प्रेरणा से ही मैंने विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं धार्मिक परीक्षाओं में भाग लेना प्रारम्भ किया था। सच तो यह है कि पण्डित जी ने मुझे अग्रसर करने में एक प्रज्वलित ज्योति का काम किया है और अब भी कर रहे हैं। केवल मेरा ही नहीं, अपितु न जाने कितने युवक एवं बच्चों का गत कई वर्षों से पथ-प्रदर्शन का

कार्य करते आ रहे हैं। यही कारण है कि उनके नाम पर ही श्रद्धा होने लगी है।

जो उन्हें जानते हैं, उनको शब्दों की आवश्यकता ही नहीं और जो उनके सम्पर्क में नहीं आये उनके लिए शब्द पर्याप्त ही नहीं हैं। उनके जीवन का प्रत्येक पहलू अनुकरणीय है। किसी भी व्यक्ति को उनके जीवन से सीखने को बहुत कुछ मिल जायेगा। जब उन्होंने बच्चों के क्षेत्र को रिक्त देखा तो प्रारम्भ से ही इस क्षेत्र में प्रयत्नशील हुये। बच्चों को अध्यापन करते समय उन्होंने चरित्र-निर्माण एवं चहुंमुखी प्रतिभाओं को विकसित करने पर बल दिया। इस क्षेत्र में विभिन्न प्रति-योगिताओं, वाद-विवाद, गायन, लेख, भाषण, चित्रकला, विभिन्न खेलों, शिक्षण शिवरों आदि का उत्साह एवं रुचिपूर्वक आप आयोजन करते कराते रहे हैं। अपने व्याख्यानों में प्रायः कहा करते हैं कि बुराइयों से बचा हुआ ही बच्चा है एवं कुमार की परिभाषा बुराइयों को मारने से करते हैं। उनके शब्दों में आदर्श समाज" भावी पीढ़ी पर ही आधारित है। पण्डित जी संस्कृत के विद्वान् हैं तो भी व्याख्यानों एवं बोल चाल में हिन्दी का ही प्रयोग करते हैं ताकि व्यक्ति बिना कठिनाई के समझ सके। इससे आपकी हिन्दी के प्रति निष्ठा भी प्रतीत होती है। उनकी कोमल, वात्सल्यपूर्ण मृदु वाणी की ओर बच्चे बहुत आकर्षित होते हैं।

समय की पाबन्दी का पण्डित जी विशेष ध्यान रखते हैं। किसी भी कार्यक्रम में जल्दी पहुंचना ही उचित मानते हैं। वे अपने कार्यक्रम को प्रायः नोट कर लेते हैं। महीनों के कार्यक्रम उनके पास लिखे रहते हैं और फिर पूर्णतः उस पर ही काम करते हैं। एक बार कोई कार्यक्रम तय हो गया तो कोई प्रलो-भन उन्हें हिला नहीं सकता। प्रोग्राम नोट करना मैंने पण्डित

जी की देखा-देखी ही प्रारम्भ किया था। मैं अब अनुभव करता हूं कि इस प्रकार कार्यक्रम लिखने से कार्य करना कितना सरल हो जाता है। उनका एक एक मिनट बंधा सा है। उनमें अन्य भाषण कर्त्ताओं की भांति देर से आने का मिथ्याभिमान छू तक नहीं गया है। पण्डित जी उच्च कोटि के लेखक हैं। उनके उत्साहवर्द्धक लेख भी प्राय: प्रकाशित होते रहते हैं। जहां पण्डितजी उच्चकोटि के लेखक हैं वहां उनकी भाषण-शैली भी अनूठी है। वे किसी भी विषय को इतने रोचक ढ़ंग से प्रस्तुत करते हैं कि श्रोतागण को उकताने का अवसर ही नहीं मिल पाता।

समय के अनुसार सूझ-बूझ एवं शब्दों का प्रयोग उनकी कार्यकुशलता का परिचायक है। यदि कोई कार्यक्रम सुचारु रूप से करना है तो पण्डित जी पर छोड़ दीजिए वे कार्य को उत्तरदायित्व के साथ निभाते हैं।

"सादा जीवन उच्च विचार" की आप साक्षात् मूर्ति हैं। यद्यपि आपका पहनावा बहुत साधारण है तो भी कपड़े खूब फबते हैं। पण्डित जी सामाजिक, धार्मिक सुधार कार्य करने में वास्ताव में धर्म के इन्दु के समान हैं।

पण्डित जी गुण ग्राहक हैं। यदि कहीं भी कुछ अच्छा मिल जाये तो उसे धारण करने में सदैव उदारता बरतते हैं। अपनी प्रसिद्धि की ओर पण्डित जी कोई ध्यान ही नहीं देते हैं। वे प्राय कहा करते हैं कि यह मैं अपना कर्त्तव्य तथा धर्म कार्य समझ कर कर रहा हूँ।

आप उच्च कोटि के लेखक, वक्ता, सामाजिक-धार्मिक-सुधारक, अध्यापक, दानी, धैर्यवान् तथा अनेकों गुणों के समन्वितरूप हैं। आर्य युवक परिषद् के प्रधान होने के नाते परिषद् को अद्भुत मणि आप प्राप्त हो गये हैं। ★★★

सत्यार्थप्रकाश की परीक्षाएँ

आर्य युवक परिषद, दिल्ली (पंजी०) के ... देवव्रत जी धर्मेन्दु आर्योपदेशक ने १६ ... के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का जन-जन ... स्वाध्याय रूपी यज्ञ प्रारम्भ किया था। व... प्रतिवर्ष वेद सप्ताह के उपलक्ष्य में सारे देश में सम्पन्न हो रहा है। अब तक ६० हजार से ऊपर देशवासी सत्यार्थ-प्रकाश की परीक्षाऐं उत्तीर्ण कर चुके हैं। ये चार परीक्षाए निम्न प्रकार से होती हैं :—

(१) सत्यार्थ-रत्न परीक्षा— तीसरा, पांचवां तथा दसवां समुल्लास
(२) सत्यार्थ-भूषण परीक्षा - पहला तथा छठे से नवां समुल्लास
(३) सत्यार्थ-विशारद परीक्षा—दूसरा, चौथा तथा अन्तिम ४ ,,
(४) सत्यार्थ-शास्त्री परीक्षा -सम्पूर्ण पुस्तक पर क्रम से ... ३० फुलस्केप साईज कागजों पर स्वतः निबन्ध लिखना।

आबाल वृद्ध कोई भी व्यक्ति परीक्षा दे सकता है। ... रार्थ शुल्क नाम मात्र है। कहीं भी ५ परीक्षार्थी होने पर केन्द्र बन सकता है। प्रत्येक परीक्षा में भारी पारितोषिक, प्रथम तीन परीक्षाओं में छात्र वृत्तियां, २५ परीक्षार्थियों के हिसाब से प्रत्येक केन्द्र में १ पारितोषिक, सब से ज्यादा परीक्षार्थी बिठाने वाले आर्यसमाज तथा शिक्षण संस्था में पचास-पचास के पारितोषिक भी दिये जाते हैं। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को सुन्दर व आकर्षक प्रमाण पत्र, इसके अतिरिक्त केन्द्र व्यवस्थापकों को भी "सत्यार्थप्रचारक" प्रशस्ति-पत्र दिये जाते हैं।

"सत्यार्थप्रकाश की इन परीक्षाओं में आप स्वयं भारी संख्या में सम्मिलित होवें और अन्यों को भी प्रेरणा कर परीक्षाओं में बिठाकर पुण्य व यश के भागी बनें। परीक्षा सम्बन्धी सभी प्रकार की जानकारी के लिए निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें :

चमनलाल एम. ए. परीक्षा मन्त्री, आर्य युवक परिषद
एच—६४ अशोक विहार, दिल्ली-५२

जी की देखा-देखी
करता हूं कि इस प्रकार
सरल हो जाता है। उ
भाषण कर्त्ताओं क
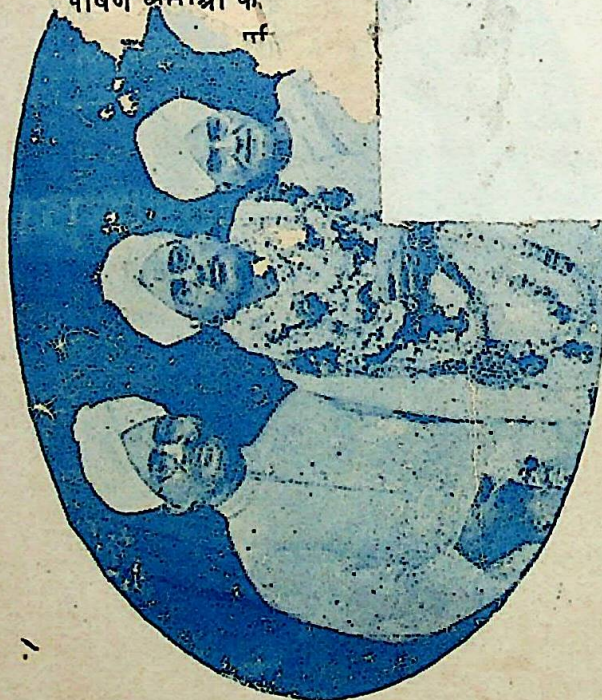
हैदराबाद सत्याग्रह समिति दिल्ली के मन्त्री श्री
श्री प्रो० सुधाकर एम. ए. श्री लाला
महाशय ... जी लाहौर

प्रकाशक: ओ३म्प्रकाश एम, एस सी. मन्त्री, आर्ययुवक परिषद्
१६५४, कूंचा दखिनीराय, दरियागंज नई दिल्ली-२

मुद्रक: सार्वदेशिक प्रेस, पाटौदी हाऊस
दरियागंज, नई दिल्ली-२

१३ अप्रैल १६७७

मूल्य १) रुपया